फार्म एन फूड

16 मई 2020 ■ ₹ 15

जमीन में यकीन, यकीन में धन

अपनी दुधारू गाय खुद तैयार कीजिए

सब्जियों का कीट प्रबंधन

जूट की खेती से बढ़ाएं आमदनी

लू से बचाव के घरेलू नुसखे

सब्सक्राइब करने के लिए 85888843437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

लेजर लैंड लैवलर
खेत करे एकसार

www.sarita.in/farm-n-food

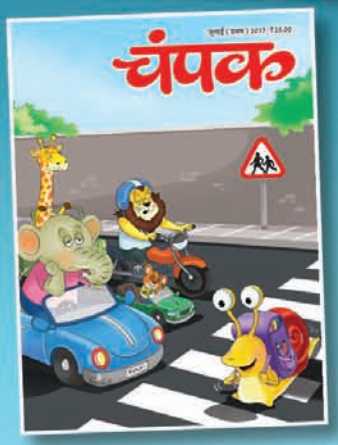

सुखी जीवन संतुष्ट परिवार समृद्ध घर की मार्गदर्शक पत्रिकाएं

हमारा उद्देश्य पाठकों को ऐसे नए युग में ले जाना है जहां कड़ी मेहनत, लगन व बुद्धि के बल से सफलता प्राप्त होती है न कि जाति, धर्म, पाखंड, जोड़तोड़ या भ्रष्टाचार की वजह से. यदि हम आत्मसम्मान के साथ सिर ऊंचा कर के जीना चाहते हैं तो हमें अपना भविष्य आत्मबल पर तय करना होगा.

दिल्ली प्रैस कार्यालय फोन नं. : 011-41398888, एक्सटेंशन नं. : 221, 119, टोल फ्री फोन नं. : 1800-103-8880,
ईमेल - subscription@delhipress.in / circulation@delhipressgroup.com

संपादकीय

आप के लिए

इस समय देश के तमाम राज्यों की सीमाएं सील हैं. लोगों का आनाजाना बंद है. जरूरी सामान जैसे फल, सब्जी, अनाज, दूध आदि को इस में छूट दी गई है.

परंतु किसान अपनी उपज को ले कर परेशान हैं क्योंकि खरीदार नहीं हैं. फलसब्जी फसल, खीरा, टमाटर आदि खेतों में सड़ रहे हैं.

कुछ इलाकों में किसान अपनी फसल को औनेपौने दामों पर बेचने को मजबूर हैं. पहले उपज खरीदने के लिए अनेक व्यापारी किसान के खेतों पर ही पहुंच कर उपज खरीद लेते थे, लेकिन अब कोरोना

के चलते व्यापारी भी खेतों पर नहीं पहुंच रहे हैं और ज्यादातर किसान अपनी उपज को मंडी भी नहीं पहुंचा पा रहे हैं. किसान के सामने अनेक समस्याएं हैं.

दूसरी तरफ बेमौसम आंधीबरसात ने भी फसलों को तबाह करने में कसर नहीं छोड़ी. एक तरफ महामारी की मार, तो दूसरी तरफ मौसम की मार.

जब खेत और किसानों के इतने खराब हालात होंगे तो देश का हर आम आदमी इस मार से अछूता नहीं रहेगा. हालांकि सरकार द्वारा किसान सम्मान निधि योजना के तहत किसानों को राहत देने की कोशिश की जा रही है, लेकिन वह भी सब किसानों तक नहीं पहुंच पा रही है.

आज के ऐसे संकट के दौर में यह राहत ऊंट के मुंह में जीरा ही साबित हो रही है. अनेक किसानों को खास मदद की जरूरत है. यह सरकार को तय करना है कि उन्हें जमीनी स्तर पर कैसे मदद मिले. देश की रीढ़ किसान है और वही कमजोर पड़ गई तो इस के बुरे नतीजे हम सभी को भुगतने होंगे.

इस में जो...

फार्म फूड 16 मई, 2020

लेजर लैंड लैवलर
खेत करे एकसार

किसानों की सब से बड़ी समस्या यह होती है कि उन के खेत समतल नहीं होते हैं, जिस से उन्हें खेतीबारी में बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, पर अब लेजर लैंड लैवलर नामक एक ऐसी मशीन आ गई है, जो इस समस्या से उन्हें नजात दिला सकती है. खेत को समतल करने का यह अचूक तरीका है.

6 अपनी दुधारू गाय खुद तैयार कीजिए
9 ढेंचा की खेती से बढ़ाएं खेतों की उर्वराशक्ति
10 मिर्च की फसल में लगने वाले कीट और रोग
11 मिट्टी की जांच कराएं
12 जायद सब्जियों का समेकित कीट प्रबंधन
15 खबरें खेतखलिहानों की
22 सवाल किसानों के
23 गरमी में अंडा देने वाली मुरगियों का प्रबंधन
24 लौकडाउन में जी उठी यमुना
26 ग्रीन/पौलीहाउस में नर्सरी: आय व जुड़ाव का जरीया
27 मौसमी फलों का सेवन
28 जूट की उन्नत खेती से बढ़ाएं आमदनी
31 परवल और धनिया: कीट और रोगों की रोकथाम
32 लू से बचाव के घरेलू नुसखे

कुछ कहती हैं तसवीरें

34

खेत में उगे सीताफल की बढ़िया फसल बता रही है कि इस बार फिर किसानों की मेहनत रंग लाई है, पर क्या उन्हें मंडी में इस के वाजिब दाम भी मिलेंगे, ताकि इन के चेहरे पर मुसकान बनी रहे?

फार्म फूड
जमीन में सोना, सोना में धन
16 मई 2020, अंक: 318
संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ
दिल्ली प्रैस
संस्थापक : विश्वनाथ
(1917-2002)

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. **अन्य कार्यालय:** 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009.** जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, **बेंगलुरु-560052.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, **मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय).** बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, **मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय).** 16-ए, अमृता बनर्जी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा, **कोलकाता-700026.** 14, पहली मंजिल, सीसस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008.** 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003.** फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, **लखनऊ-226001.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462011.** 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, **पटना-800001.** गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031.**

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से : छपने के लिए भेजे जाने वाले लेख वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी रचनाएं ज्यादा पसंद की जाएंगी.

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Pte. Ltd., New Delhi-110055. India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रैस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888. एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264. टोल फ्री नंबर : 18001038880 (सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/ह्वाट्सऐप नंबर : 08588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

फार्म एन फूड पाक्षिक पत्रिका की एक प्रति की कीमत 15 रु.
1 साल के लिए 589 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)
2 साल के लिए 1139 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि. ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

लेजर लैंड लैवलर

खेत करे एकसार

अच्छी पैदावार और लागत कम करने के लिए खेत का समतल होना जरूरी है. पर क्यों?

* भानु प्रकाश राणा

फसल से बेहतर पैदावार लेने के लिए खेत का समतल होना जरूरी है. अगर खेत कहीं से ऊंचा या नीचा नहीं है तो उस खेत की पैदावार दूसरे असमतल खेतों से कहीं ज्यादा होगी. साथ ही, लागत भी कम होगी.

ऊंचेनीचे खेत में सिंचाई करते समय पानी पूरी तरह से समान रूप से नहीं फैल पाता है. इस वजह से खेत में कुछ जगहों पर खरपतवार पनपने लगते हैं और सभी पौधों व बीजों को सही अनुपात में पानी नहीं मिल पाता है, जिस से पैदावार पर बुरा असर पड़ता है. लेजर लैंड लैवलर मशीन का इस्तेमाल कर के किसान इस समस्या को दूर कर सकते हैं.

लेजर लैंड लैवलर

यह लैवलर 4 उपकरणों से मिल कर बनता है, जिन्हें लेजर ट्रांसमीटर, लेजर रिसीवर, कंट्रोल बौक्स व लैवलर कहते हैं.

लेजर ट्रांसमीटर : लेजर ट्रांसमीटर एक तिपाई स्टैंड पर लगा होता है, जो लेजर यानी तरंगों को ट्रैक्टर पर तेजी से भेजता है. इन तरंगों की मदद से खेत के ऊंचेनीचे हिस्सों का पता लगता है. यह औजार खेत के किसी भी हिस्से में रखा जा सकता है.

लेजर रिसीवर : यह औजार लैवलर के ऊपर लगा होता है. ट्रांसमीटर द्वारा भेजी गई तरंगों को यह लगातार पकड़ता रहता है और इस की सूचना कंट्रोल बौक्स को भेजता रहता है.

कंट्रोल बौक्स : यह औजार ट्रैक्टर के ऊपर लगाया जाता है. लेजर रिसीवर द्वारा हासिल तरंगों के मुताबिक ट्रैक्टर के हाइड्रोलिक सिस्टम की मदद से लैवलर को ऊपरनीचे करता रहता है.

लैवलर : यह औजार ट्रैक्टर के हाइड्रोलिक सिस्टम से जोड़ा जाता है, जो तीनों औजारों की मदद से खेत को एकसमान रूप से समतल करता है.

काम करने का तरीका

जब ट्रांसमीटर से तरंगें निकल कर रिसीवर से टकराती हैं, जो बकेट के ऊपर लगे स्टैंड पर बंधा होता है, तो रिसीवर किरणों के मध्य में रहते हुए चेन द्वारा जुड़े हुए कंट्रोल बौक्स को ऊपर या नीचे जाने के लिए सिग्नल भेजता है. कंट्रोल बौक्स में से उसी समय करंट हाइड्रोलिक सिस्टम को जाता है, जिस से हाइड्रोलिक तेल की सप्लाई बकेट के पीछे टायरों के बीच में लगे हाइड्रोलिक सिलैंडर को मिलती है. यह सिलैंडर टायरों को ऊपरनीचे करता है, जिस के विपरीत बकेट ऊपरनीचे होती रहती है.

बकेट आगेपीछे दोनों तरफ पिनों के साथ जुड़ी होती है, इसलिए उस पर जमीन के ऊंचानीचा होने का कोई असर नहीं पड़ता. बकेट को एक सीमित ऊंचाई पर बंधे होने से उस के आगे आने वाली मिट्टी कट कर आगे खिंची चली जाती है और जहां पर गड्ढा मिलता है, मिट्टी खुद ही बकेट के नीचे से निकल कर फैलती रहती है. इस तरह खेत समतल हो जाता है. ट्रैक्टर को ऊंचाई की तरफ से निचाई की दिशा में चलाना होता है, बाकी काम लेजर लैवलर द्वारा अपनेआप किया जाता है.

लेजर लैंड लैवलर के फायदे

- खेत में पानी, खाद और कीटनाशक दवाओं का एकसमान फैलाव होने से पैदावार बढ़ती है और मिट्टी समतल करने से समय की बचत होती है.
- पानी का पूरापूरा इस्तेमाल होता है और पानी की 30-40 फीसदी तक बचत होती है.
- फसल की पैदावार में बढ़ोतरी होती है.
- खरपतवारों में कमी आती है और खरपतवार काबू करने में काफी मदद मिलती है.
- फसल एकसमान पकती है. ■

यंत्र की खरीद पर सरकार द्वारा सब्सिडी

लेजर लैंड लैवलर एक महंगा कृषि यंत्र है. इस यंत्र को इस्तेमाल करने के लिए ट्रैक्टर की भी जरूरत होती है.

इस यंत्र की खरीद पर सरकार द्वारा किसानों को सब्सिडी भी दी जाती है, जो अलगअलग राज्यों में कम या ज्यादा हो सकती है. आमतौर पर छोटे, सीमांतक महिला किसानों के लिए सरकार द्वारा 50 फीसदी तक सब्सिडी दी जाती है. बड़े किसानों को यह सब्सिडी 40 फीसदी तक भी हो सकती है.

हरियाणा के किसानों के लिए : अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के छोटे किसान या महिला किसानों 50 फीसदी तक सब्सिडी का प्रावधान है.

यह सब्सिडी हरियाणा में वे किसान ले सकते हैं, जिन्होंने बीते 2 सालों के दौरान किसी भी अन्य यंत्र पर सब्सिडी का लाभ न लिया हो. इस के लिए किसानों को www.haryanacrm.com पर आवेदन करना होगा. एक किसान 3 अलगअलग कृषि यंत्रों के लिए आवेदन कर सकता है.

किसान को आवेदन करते समय कुछ टोकन मनी जमा करानी होगी. जो 1 लाख से 3 लाख रुपए तक वाले कृषि यंत्रों के लिए 2,000 रुपए से ले कर 5,000 रुपए तक होगी. 3 लाख से अधिक कीमत वाली मशीनों के लिए 10,000 की रकम जमा करानी होगी.

यह रकम कृषि यंत्र की चयन प्रक्रिया पूरी होने के बाद किसान के खाते में वापस कर दी जाती है.

इस के अलावा कुछ शर्तें भी हैं, जिन का पालन करना भी जरूरी है. जैसे, किसानों को पोर्टल पर आवेदन करते समय यह निश्चित करना होगा कि वह अपने खेत में फसल अवशेष नहीं जलाएंगे.

ट्रैक्टरचालित यंत्रों के लिए यदि आवेदन किया है तो किसान के पास ट्रैक्टर भी होना चाहिए, जो उसी के नाम रजिस्टर्ड हो.

आवेदक के नाम या उस की पत्नी/पति/पिता/माता/पुत्र/पुत्री के नाम पर कृषि जमीन होनी चाहिए.

यदि आवेदनकर्ता तय गिनती से कहीं ज्यादा हैं, तो औनलाइन के जरीए ड्रा निकाला जाएगा. इस के बाद संबंधित कृषि अधिकारी कार्यवाही को पूरा करने के बाद चुने गए किसानों को सब्सिडी का प्रमाणपत्र जारी करेगा.

प्रमाणपत्र जारी होने के 7 दिन के अंदर पात्र किसान को संबंधित कृषि यंत्र खरीदना होगा और सहायक कृषि अभियंता अधिकारी के दफ्तर में ई वे बिल (50,000 से अधिक कीमत वाली मशीनों के लिए) के साथ कृषि यंत्र खरीदने का बिल जमा करना होगा. समय निकलने के बाद कोई क्लैम नहीं दिया जाएगा और प्रतीक्षा सूची वाले अगले आवेदनकर्ता को मौका दिया जाएगा.

संबंधित वैबसाइट पर कृषि यंत्र निर्माताओं व यंत्र बेचने वालों की सूची भी होती है. अपनी सुविधानुसार मनपसंद डीलर से यंत्र लिया जा सकता है.

कृषि यंत्र खरीदने के बाद संबंधित अधिकारी किसान के यहां जा कर यह तय करता है कि मशीन खरीद ली गई है. उस की मंजूरी के बाद किसान के बैंक खाते से सब्सिडी की रकम सरकार द्वारा डाल दी जाती है.

दूसरे प्रदेशों में भी इसी तरह की प्रक्रिया अपनाई जाती है.

भाग 1

छोटा पशुपालक किसान हो या डेरी चलाने वाला कोई कारोबारी, सब अपने पशुधन का बहुत खयाल रखते हैं, ताकि दूध देने के मामले में पशु नंबर वन रहे, यही बात गाय पर भी लागू होती है. यहां हम दुधारू गाय कैसे तैयार की जाती है, इस बारे में एक सीरीज चला रहे हैं, जिस में माहिर डाक्टर ने सस्ते और कारगर उपाय बताए हैं...

अपनी दुधारू गाय खुद तैयार कीजिए

किसी भी डेरी की कामयाबी के लिए जरूरी है कि उस में अच्छी दुधारू गाएं हों. दुधारू गाएं बाजार से खरीद कर लाने से बेहतर है कि अपनी खुद की दुधारू गाय तैयार की जाए.

* डा. संजीव कुमार वर्मा, प्रधान वैज्ञानिक (पशु पोषण)
भा. कृ. अनु. प. - केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, मेरठ

आप के फार्म पर जो बछिया मौजूद है, अगर आप उस की सही देखभाल करेंगे, उसे सही मात्रा में पोषण उपलब्ध कराएंगे, तो बड़ी हो कर वही बेहतरीन दुधारू गाय बनेगी.

पैदा होने वाली बछिया अच्छी दुधारू गाय बनेगी या नहीं, इस की नींव उस के पैदा होने से भी पहले पड़ जाती है. इस के लिए सब से खास है गर्भाधान. उस बछिया को पैदा करवाने के लिए गाय का गर्भाधान, जिस वीर्य से कराया गया है, उसी के मुताबिक आनुवंशिक गुणों वाली बछिया पैदा होगी. अगर अच्छी नस्ल के सांड़ के वीर्य से गर्भाधान करवाया गया है, तो पैदा होने वाली बछिया भी निश्चित रूप से उत्तम गुणवत्ता की होगी.

दूसरा अहम बिंदु है कि गर्भकाल के दौरान गाय को अगर समुचित पोषण उपलब्ध करवाया गया है, तो पैदा होने वाली बछिया का देह भार आशा के

अनुरूप होगा और बाद में वह अच्छी दुधारू गाय के रूप में विकसित होगी. कम देह भार वाली बछिया भविष्य में अच्छी दुधारू गाय नहीं बन सकेगी.

तीसरा अहम बिंदु है कि पैदा होने के बाद नवजात बछिया का पोषण अगर सही से हुआ है, तो वह निश्चित रूप से अच्छी दुधारू गाय बनेगी.

चौथा अहम बिंदु है कि बढ़वार के दौरान उस बछिया को संतुलित पोषण उपलब्ध कराया जाना. अगर बछिया को सभी पोषक तत्त्व उस की आवश्यकता के अनुरूप दिए जाएंगे, तो उस की दैनिक बढ़वार संतोषजनक होगी और वह नियत समय तक उतना देह भार ग्रहण कर लेगी, जितना उस के गर्भाधान के लिए जरूरी है. इस के बाद समय पर ऋतुमयी हो कर गर्भधारण करेगी और एक बेहतरीन दुधारू गाय बनेगी.

3 महीने की उम्र तक का समय अहम

बछिया के जन्म से ले कर 3 महीने की उम्र तक का समय सब से अहम होता है. बच्चा मां के पेट से बाहर निकल कर नए वातावरण में आता है, तो उसे तरहतरह के तनावों का सामना करना पड़ता है. ऐसी हालत में पोषण और प्रबंधन बहुत खास हो जाता है.

पैदा होने के तुरंत बाद उसे मां का दूध, जिसे खीस भी कहते हैं, पिलाया जाना बहुत जरूरी होता है. जन्म के पहले 4 घंटे के दौरान पिलाया गया खीस नवजात बछिया को बीमारियों से लड़ने की खास ताकत देता है, इसलिए इसे अमृत के समान कहा गया है.

खीस में ऐसा क्या है?

खीस में एक विशेष प्रकार का प्रोटीन होता है. इसे इम्युनोग्लोबुलिंस कहते हैं. इम्युनोग्लोबुलिंस वे सिपाही हैं, जो बछिया के ऊपर किसी भी प्रकार के बैक्टीरिया या वायरस के हमले के समय लड़ते हैं और बछिया की उन तमाम बीमारियों से रक्षा करते हैं.

खीस में 70 फीसदी से 80 फीसदी तक इम्युनोग्लोबुलिंस 'जी' होते हैं, जो शरीर में प्रवेश करने वाले किसी भी रोगकारक को नष्ट कर देते हैं.

खीस में 10 फीसदी से 15 फीसदी तक इम्युनोग्लोबुलिंस 'एम' होते हैं. यह सैप्टिक फैलाने वाले बैक्टीरिया को खत्म करते है.

खीस में 15 फीसदी तक इम्युनोग्लोबुलिंस 'ए' होते है, जो बछिया की आंतों में चढ़े सुरक्षा कवच 'म्यूकोसा' को बचाते हैं और किसी भी रोगकारक के सामने ढाल बन कर खड़े हो जाते हैं.

सब से अहम बात यह है कि जन्म के पहले 4 घंटों में इन इम्युनोग्लोबुलिंस का बछिया की आंतों में अवशोषण सब से ज्यादा होता है. जैसेजैसे समय बीतता जाता है, आंतों की इन को अवशोषित करने की क्षमता घटती जाती है.

इसलिए यह देखा गया है कि जिन बछियों को जन्म के पहले 4 घंटों के अंदर खीस नहीं मिलता है, उन के अंदर रोग ज्यादा लगते हैं और उन बछियों में मृत्युदर भी अपेक्षाकृत अधिक होती है.

खीस में इन इम्युनोग्लोबुलिंस के अलावा प्रोटीन, विभिन्न विटामिंस, मिनरल्स, ऊर्जा प्रदान करने वाले लैक्टोज और फैट होते हैं. इस के अतिरिक्त खीस में कुछ मात्रा में इंसुलिन हार्मोन और अन्य ग्रोथ फैक्टर (आईजीएफ-1) होते हैं, जो बछिया को ऊर्जा प्रदान करते हैं और उस की बढ़वार में सहायक होते हैं.

बछिया के जन्म से ले कर अगले 24 घंटे के दौरान गाय से निकलने वाले दूध को खीस कहते हैं और 24 से 72 घंटों के बीच निकलने वाले दूध को ट्रांजिशन मिल्क कहते हैं.

खीस और ट्रांजिशन मिल्क का संगठन सामान्य दूध से अलग होता है. 72 घंटों के बाद निकलने वाले दूध का संगठन बदल जाता है और इसे सामान्य दूध कहते हैं. इस सामान्य दूध को ही बेचा जाता है.

4 घंटों के अंदर खीस पिलाया जाना जरूरी

नवजात बछिया को जन्म के 4 घंटों के अंदर खीस पिलाया जाना बहुत जरूरी है. जिन बछियों को इन पहले 4 घंटों के दौरान खीस नहीं पिलाया जाता, उन के जिंदा रहने की संभावना कम हो जाती है. अगर वे जिंदा रहें भी तो वे अच्छी दुधारू गाय बन ही नहीं सकतीं.

बछिया जब पैदा होती है, तो उस की अपनी कोई रोग प्रतिरोधकता नहीं होती है, जिस के कारण वह बहुत जल्दी किसी भी रोग की चपेट में आ सकती है. खीस उसे रोग प्रतिरोधकता प्रदान करता है और उस के खुद के रोग प्रतिरोधक तंत्र को विकसित करने में सहायता प्रदान करता है.

जब बछिया पैदा होती है तो उस के पास न तो पर्याप्त ग्लाइकोजन स्टोर होता है और न ही इतना फैट होता है कि इन दोनों के उपापचय से बछिया को जीने के लिए पर्याप्त ऊर्जा मिल जाए. इस समय बछिया को ऊर्जा मिलती है खीस से ही. खीस में मौजूद कुल सौलिड का तकरीबन 5वां हिस्सा आसानी से पचने योग्य फैट होता है. इसी फैट के पाचन से बछिया को आवश्यक ऊर्जा मिलती है और उस की वृद्धि होती है.

बछिया मां के पेट के अंदर हमेशा एक निश्चित वातावरण और तापमान में रही है. पेट से बाहर आने के बाद वातावरण का तापमान भिन्न होता है. खीस के कारण ही बछिया उस तापमान से तालमेल बैठा पाती है.

एक स्टडी में तो यहां तक पाया गया है कि खीस पीने के 1 घंटे बाद बछिया के शरीर का तापमान 15 फीसदी तक बढ़ जाता है.

खीस में मौजूद इम्युनोग्लोबुलिंस का अवशोषण वैसे तो अगले 16 घंटों तक होता

रहता है, मगर सर्वाधिक अवशोषण पहले 4 घंटों में ही होता है. बछिया को इन पहले 4 घंटों में खीस न पिलाने से उसे जीवन के पहले एक महीने के दौरान श्वसन तंत्र के रोगों से सामना करना पड़ेगा और 30 फीसदी मामलों में बछिया की मौत तक हो जाती है.

इम्युनोग्लोबुलिंस के अलावा खीस में 'लैक्टोफेरिन' पाया जाता है, जिस के कारण बछिया विभिन्न बैक्टीरिया, फंगस, वायरस और प्रोटोजोआ के हमलों से बची रहती है. इसी के कारण बछिया में डायरिया के कारण होने वाली मौतों पर भी लगाम लगती है.

बछिया जब पैदा होती है, तो उस की आंतों में कोई भी लाभकारी माइक्रोफ्लोरा नहीं होता है. खीस में कुछ खास लाभकारी बैक्टीरिया भी मौजूद होते हैं, जो बछिया की आंतों में जा कर सैटल हो जाते हैं. लाभकारी बैक्टीरिया की उपस्थिति के कारण वहां हानिकारक बैक्टीरिया पनप नहीं पाते. खीस पीने वाली बछिया को सब से घातक बैक्टीरिया ई कोलाई का इंफैक्शन बहुत कम होता है.

खीस पीने वाली बछिया की उत्पादकता बेहतर होती है और वह अच्छी दुधारू गाय बनने

के बाद ज्यादा समय तक जिंदा रहती है.

जिन बछियों को खीस पिलाया जाता है, उन में वृद्धिकाल में वृद्धि की दर भी अपेक्षाकृत अधिक होती है और वह अपेक्षाकृत कम समय में सर्विस कराए जाने के लिए तैयार हो जाती है.

जिन बछियों को खीस पिलाया जाता है, वे अपने पहले ब्यांत में ज्यादा दूध देती हैं.

खीस दस्तावर भी होता है, जिस के कारण बछिया के पेट में मौजूद मल जिसे मैकोनियम कहते हैं, आसानी से बाहर निकल जाता है.

बछिया का भरणपोषण किस तरह से करना होगा?

बछिया के जन्म के बाद शुरुआती 4 घंटों में पिलाया गया खीस, उस के बाद के 68 घंटों में पिलाया गया खीस और फिर 6 महीने की उम्र तक पिलाया गया दूध और उसे खिलाए गए अन्य खाद्य पदार्थ जैसे हरा चारा, सूखी मुलायम घास और काफ स्टार्टर उस की वृद्धि और परिपक्वता को निर्धारित करेंगे.

5 खास बातों का ध्यान रखना होगा

- बछिया को जन्म के 4 घंटों के अंदर खीस पिलाना होगा.
- 3 दिन तक खीस पिलाना होगा और उस के बाद 4 महीने तक दूध पिलाना होगा.
- चौथे दिन से काफ स्टार्टर खिलाना शुरू करना होगा.
- तीसरे हफ्ते से मुलायम हरी घास खिलाना शुरू करना होगा.
- बछिया की डीवार्मिंग और टीकाकरण कराना होगा.

हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि बछिया को इस तरह से पोषण दिया जाए कि पहली सर्विस के समय वह परिपक्व देहभार का कम से कम 60 फीसदी से 70 फीसदी देहभार प्राप्त कर ले.

बछिया जिस प्रजाति की है, उस प्रजाति की बड़ी गाय का औसत देहभार अगर 400 किलोग्राम होता है, तो सर्विस कराते समय औसर (हीफर) का वजन कम से कम 240 किलोग्राम होना चाहिए या दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि जितनी जल्दी औसर का वजन 240 किलोग्राम होगा, उतनी ही जल्दी वह सर्विस कराए जाने के काबिल हो जाएगी. ■

केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक कर रहे हैं

वीडियो काल के जरीए पशुओं का उपचार

आजकल कोराना वायरस के कहर के कारण सभी लोगों से घर के अंदर रहने और लौकडाउन का पालन करने की सलाह दी, तो मेरठ छावनी स्थिति भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों को चिंता हुई कि इस स्थिति में अगर कोई पशु बीमार होता है, तो किसान के पास कोई विकल्प नहीं होगा और हो सकता है कि चिकित्सीय सहायता न मिलने पर वह पशु मर सकता है.

ऐसे समय में केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान के डा. संजीव कुमार वर्मा, जो कि पशु पोषण के प्रधान वैज्ञानिक हैं और संस्थान में प्रचारप्रसार के प्रभारी हैं, वे आगे आए और अपना ह्वाट्सएप नंबर 9933221103 किसानों के लिए रिलीज किया. इसे स्थानीय समाचारपत्रों के 29 मार्च और 4 अप्रैल के संस्करणों में प्रमुखता से छापा गया. इस में उन्होंने किसानों से अपील कि थी पशुओं संबंधी कोई भी समस्या आने पर उन्हें किसी भी समय संपर्क किया जा सकता है.

उन के इस कदम का इतना असर हुआ कि तब से किसान अपने पशुओं की बीमारी और खानपान से संबंधित सलाह ले रहे हैं.

डा. संजीव कुमार वर्मा और उन की टीम के सदस्य डा. योगेश कुमार सोनी, जो कि एनिमल रीप्रोडक्शन के वैज्ञानिक हैं और डा. सुमित महाजन जो कि वेटनरी मैडिसन के वैज्ञानिक हैं के साथ मिल कर किसानों को बीमारियों के घरेलू उपचार बता रहे हैं या फिर दवाओं के बारे में ह्वाट्सएप बता रहे हैं. किसान इन दवाओं की व्यवस्था कर के अपने पशुओं को ठीक कर के राहत की सांस ले रहे हैं.

डा. संजीव कुमार वर्मा के पास अभी तक जिला मेरठ ही नहीं, बल्कि आसपास के जिलों जैसे अलीगढ़, बागपत, बुलंदशहर, फर्रुखाबाद, गाजियाबाद, गाजीपुर, हापुड़, कानपुर, मथुरा, मुजफ्फरनगर, पीलीभीत, रायबरेली तक के फोन तो आ ही रहे हैं, बल्कि आसपास के प्रदेशों जैसे बिहार, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, झारखंड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तराखंड तक के किसानों ने संपर्क किया है.

मोबाइल पर सलाह देने के अलावा डा. संजीव कुमार वर्मा और उन की टीम किसानों के 9 ह्वाट्सएप ग्रुप भी चला रही है. इन ग्रुप्स में कोरोना के बचाव से ले कर पशुपालन के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी के साथसाथ मौसम की भी जानकारी दी जा रही है. इन 9 ह्वाट्सएप ग्रुप्स में अब तक 1,900 से भी अधिक किसान जुड़ चुके हैं.

इन सभी जानकारियों को डा. संजीव कुमार वर्मा अपने फेसबुक अकाउंट पर भी साझा करते हैं, जहां पर यह सब जानकारियां उन से जुड़े हजारों पाठकों तक मुफ्त में पहुचाई जा रही हैं.

इस समस्त काम को करने में संस्थान के निदेशक डाक्टर श्रीकांत त्यागी का मार्गदर्शन और डा. नरेश प्रसाद का सहयोग सराहनीय है.

डा. संजीव कुमार वर्मा की टीम का काम सुबह से ही किसानों के फोन आते ही शुरू हो जाता है और देर रात तक चलता है.

केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान के सीआईआरसी गोधनवाणी ह्वाट्सएप ग्रुप से जुड़ने के लिए किसान का नाम और उस का ह्वाट्सएप नंबर 9933221103 मोबाइल नंबर पर भेज कर जुड़ा जा सकता है. ■

ढैंचा की खेती से बढ़ाएं खेतों की उर्वराशक्ति

❊ आरबी सिंह, डा. एसएन सिंह, कृषि विज्ञान केंद्र, बस्ती

फसलों से ज्यादा उत्पादन प्राप्त करने के लिए रासायनिक खादों का अंधाधुंध प्रयोग किया जाता है, जिस से मिट्टी में जीवाश्म की कमी हो जाती है और मिट्टी की सेहत लगातार नीचे गिर रही है. ऐसे हालात में किसानों को उत्पादन बढ़ाने के लिए ऐसे उर्वरक (खाद) का प्रयोग करना चाहिए, जिस से मिट्टी में जीवाणुओं की कमी न हो.

खेत में जीवाश्म की मात्रा को बढ़ाने व उर्वराशक्ति के विकास में जैविक व हरी खाद का प्रयोग काफी लाभदायक रहता है. हरी खाद के रूप में प्रयोग की जाने वाली ढैंचा की फसल से मिट्टी की उर्वराशक्ति बढ़ती है. इस से फसल उत्पादन बढ़ा कर लागत कम की जा सकती है.

ढैंचा की फसल बोने के 55-60 दिनों के बाद खेत में पलटाई कर दी जाती है. इस के बाद खेत में पानी भर दिया जाता है, जिस से ढैंचा खेत में अच्छी तरह सड़ जाए.

ढैंचा से हरी खाद को लगभग 75-80 किग्रा नाइटोजन और 200-250 किग्रा कार्बनिक पदार्थ प्राप्त होता है, जिस से खेतों में पोषक तत्त्वों का संरक्षण होता है. मृदा में नाइट्रोजन के स्थिरीकरण के साथ मृदा की क्षारीय व लवणीय शक्ति बढ़ती है. ढैंचा के अन्य हरी खादों के मुकाबले नाइट्रोजन की ज्यादा मात्रा मिलती है.

ढैंचा की उन्नत किस्में

वर्तमान में ढैंचा की अनेक उन्नत किस्में हैं, जैसे पंजाबी ढैंचा-1, सीएसडी-137, हिसाब ढैंचा-1, पंत ढैंचा-1 आदि.

अनुकूल मृदा

वैसे तो हरी खाद के लिए ढैंचा की बोआई किसी भी तरह की मिट्टी में की जा सकती है, लेकिन जलमग्न, क्षारीय व लवणीय व सामान्य मिट्टियों में ढैंचा की फसल लगाने से अच्छी गुणवत्ता वाली हरी खाद मिलती है.

बोआई का समय व बीज की मात्रा

ढैंचा की बोआई से पहले खेत की एक बार जुताई कर लेनी चाहिए इस के बाद 50 किग्रा प्रति हेक्टेयर बीज की बोआई अप्रैल के अंतिम सप्ताह से ले कर जून के अंतिम सप्ताह तक करनी चाहिए. जब फसल 20 दिनों की हो जाए तो 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से यूरिया का छिड़काव करें. इस से फसल में नाइट्रोजन की मात्रा बनती है.

सिंचाई

इन के पौधों के अंकुरण के बाद सिंचाई की जरूरत कम होती है, परंतु अधिक उत्पादन के लिए 4-5 सिंचाई करनी चाहिए.

फसल के रोग व रोकथाम

ढैंचा की फसल में कम ही रोग देखने को मिलते हैं. लेकिन कीट की सूंड़ियों के आक्रमण से पौधों की पैदावार कम होती है. इस के पौधे पर लार्वा इस की पत्तियों व कोमल शाखाओं को खा कर पौधे का विकास रोक देती है, जिस के कारण पौधों की बढ़वार रुक जाती है और पैदावार गिर जाती है.

रोग व कीट की रोकथाम के लिए पौधे पर नीम औयल 5 मिलीलिटर प्रति लिटर पानी के घोल के साथ छिड़काव करना चाहिए.

उपरोक्त बिंदुओं पर ध्यान रखते हुए हरी खाद के लिए ढैंचा की खेती उपयुक्त होती है. ■

नोट : बस्ती जनपद के समस्त राजकीय बीज भंडार पर ढैंचा का बीज उपलब्ध है.

मिर्च की फसल में लगने वाले कीट और रोग

* डा. शैलेंद्र सिंह

मिर्च एक ऐसा मसाला है, जो लोगों की जिंदगी को तीखा और चटपटा बना देता है. यह हर घर की रसोई में पाई जाती है, इसलिए दुनियाभर में इस की मांग बनी रहती है. बहुत से किसान इस की खेतीबारी से रोजीरोटी कमाते हैं. पर इस में कुछ कीट और रोग ऐसे लग जाते हैं, जो फसल को नुकसान पहुंचाते हैं. आइए, जानते हैं उन के बारे में :

पीली माइट कीट

यह पीले रंग की छोटी माइट है. यह आकार में इतनी छोटी होती है, जो आसानी से दिखाई नहीं देती है. इस का प्रकोप होने पर परर्ण कुंचन (लीफ कर्ल) की तरह पत्तों में सिकुड़न आ जाती है.

इस कीट के शिशु और प्रौण दोनों ही पत्तियों का रस चूस कर हानि पहुंचाते हैं. इस का अत्यधिक प्रकोप होने पर पौधों की बढ़वार एकदम रुक जाती है और फलनेफूलने की क्षमता अकसर समाप्त हो जाती है.

मिर्च का रसाद कीट (थ्रिप्स)

प्रौण कीट 1 मिलीमीटर से कम लंबा, कोमल और हलके पीले रंग का होता है. इस के पंख झालरदार होते हैं. ये अल्पायु कीट पंखरहित होते हैं. ये सैकड़ों की संख्या में पौधों की पत्तियों की निचली सतह पर छिपे रहते हैं और कभीकभी ऊपरी सतह पर भी पाए जाते हैं.

शिशु और प्रौण कीट मार्च से नवंबर माह तक मिर्च की पत्तियों का रस चूस कर हानि पहुंचाते हैं, जिस से पत्तियां मुड़ जाती हैं और ऊपरी भाग सूख जाता है.

प्रबंधन : यदि फसल में दोनों कीट नहीं आए हैं, तो नीम तेल 1500 पीपीएम की 3 मिलीलिटर दवा प्रति लिटर पानी में घोल बना कर 15-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करते रहें.

यदि दोनों कीट आ गए हैं, तो इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल की 10 मिलीलिटर दवा प्रति 15 लिटर पानी में घोल बना कर तुरंत छिड़काव करें.

आर्द्र गलन रोग

अंकुरण का कम होना, बीज का अंकुरण से पहले गल जाना, नर्सरी में अंकुरण के बाद पौधा सड़ कर गिरने लगता है आदि इस बीमारी की प्रमुख लक्षण हैं.

प्रबंधन : बीज का उपचार बोने से पहले थीरम 2.0 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज को शोधित कर के बोना चाहिए.

जमाव होने के बाद 2 ग्राम कौपर औक्सीक्लोराइड को प्रति लिटर पानी में घोल बना

कर नर्सरी में पौधों पर छिड़काव करना चाहिए.

शीर्ष मरण रोग (डाई बैक) या फल सड़न

इस में पौधों के शीर्ष का भाग और शाखाएं ऊपर से नीचे की ओर सूखने लगती हैं. ऐसे पौधों के फल सड़ने लगते हैं और पौधे बौने रह कर सूख जाते हैं.

प्रबंधन : बीज को कार्बंडाजिम के 2.5 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर के बोएं.

खड़ी फसल में लक्षण दिखाई पड़ते ही मैंकोजेब एम 45 की 3 ग्राम दवा प्रति लिटर

पानी में घोल बना कर तुरंत छिड़काव करें.

बुकनी रोग

इस में पत्तियों के निचले भाग पर सफेद चूर्ण जम जाता है, जिस से प्रभावित पौधे मुरझाने लगते हैं.

प्रबंधन : इस रोग की रोकथाम के लिए रोग रोधी किस्म का चयन करें. रोग का प्रकोप होने पर सल्फैक्स 3 ग्राम को प्रति लिटर पानी में घोल कर 10 दिन के अंतराल पर 2 से 3 बार छिड़काव करें.

गुरुचा या पत्ती मरोड़ रोग

यह बीमारी विषाणुजनित होती है, जो सफेद मक्खी द्वारा एक पौधे से दूसरे पौधे पर पहुंचाई जाती है.

इस रोग के प्रकोप से पत्तियां सिकुड़ कर कुरूप हो जाती हैं. प्रभावित पौधे में फल कम या नहीं लगता है.

प्रबंधन : इस रोग रोधी पौधों को उखाड़ दें और गड्ढा खोद कर इन बीमार पौधों को मिट्टी में दबा देना चाहिए.

सफेद मक्खी पर अच्छी तरह से नियंत्रण पाने के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल की 10 मिलीलिटर दवा प्रति 15 लिटर पानी में घोल बना कर तुरंत छिड़काव करें.

अधिक जानकारी के लिए कृषि विज्ञान केंद के वैज्ञानिकों से संपर्क करें. ■

कोविड–19 में लौकडाउन का पालन करते हुए

मिट्टी की जांच कराएं

* डा. मनोज कुमार सिंह कृषि विज्ञान केंद्र, मनकापुर, गोंडा

खेती से अच्छी पैदावार लेने के लिए समयसमय पर खेत की मिट्टी की जांच जरूर करानी चाहिए, जैसे जमीन में होने वाले पोषक तत्त्वों के बारे में जानकारी व अनेक उन कमियों का पता चल सके, जिस से फसल पैदावार पर असर पड़ रहा है. समय रहते हम खेत की मिट्टी की जांच करा कर खेत की मिट्टी को सुधार सकते हैं और अपनी जमीन से अच्छी पैदावार ले सकते हैं.

मिट्टी की जांच कब

फसल की कटाई हो जाने अथवा परिपक्व खड़ी फसल में प्रत्येक 3 साल में फसल मौसम शुरू होने से पहले एक बार भूमि में नमी की मात्रा कम से कम हो.

क्यों

सघन खेती के कारण खेत की मिट्टी में उत्पन्न विकारों की जानकारी. मिट्टी में विभिन्न पोषक तत्त्वों की उपलब्धता की दशा का बोधक. बोई जाने वाली फसल के लिए पोषक तत्त्वों की आवश्यकता का अनुमान. संतुलित उर्वरक प्रबंध द्वारा अधिक लाभ.

कैसे

एक एकड़ क्षेत्र में लगभग 8-10 स्थानों से 'V' आकार के 6 इंच तक के गहरे गड्ढे बनाएं. एक खेत के सभी स्थानों से प्राप्त मिट्टी को एकसाथ मिला कर एक संयुक्त नमूना बनाएं. नमूने की मिट्टी से कंकड़, घास इत्यादि अलग करें. सूखे हुए नमूने को कपड़े की थैली में भर कर किसान का नाम, पता, खसरा संख्या, मोबाइल नंबर, आधार संख्या, उगाई जाने वाली फसलों आदि का ब्योरा दें. नमूना प्रयोगशाला को भेजें अथवा 'परख' मृदा परीक्षण किट द्वारा स्वयं परीक्षण करें.

पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्त्वों का वर्गीकरण

पौधे जड़ों द्वारा भूमि से पानी और पोषक तत्त्व, वायु से कार्बनडाईऔक्साइड और सूर्य से प्रकाश ऊर्जा ले कर अपने विभिन्न भागों को बनाते हैं. पोषक तत्त्वों को पौधों की आवश्यकतानुसार निम्न प्रकार वर्गीकृत किया गया है :

मुख्य पोषक तत्त्व : नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश.

गौण पोषक तत्त्व : कैल्शियम, मैग्नीशियम और गंधक.

सूक्ष्म पोषक तत्त्व : लोहा, जिंक, कौपर, मैग्नीज, मौलिब्डेनम, बोरोन और क्लोरीन.

अधिक जानकारी के लिए कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों से संपर्क करें. ■

जायद सब्जियों का समेकित कीट प्रबंधन

* डा. प्रेम शंकर, डा. एसएन सिंह, (कृषि विज्ञान केंद्र, बस्ती)
* डा. शैलेंद्र सिंह (कृषि विज्ञान केंद्र, गोरखपुर)
* डा. दिनेश कुमार यादव (कृषि विज्ञान केंद्र, चंदौली)

सब्जियों के कुल उत्पादन में जायद सब्जियों का प्रमुख स्थान है. गरमी के महीनों में ये मुख्य आहार का काम करती है. अन्य ऋतुओं की फसलों की तरह इन में भी कीटों का प्रकोप होता है, जिस से उत्पादन और गुणवत्ता पर बुरा पड़ता है. इसलिए यह जरूरी है कि किसान भाइयों को जायद की सब्जियों में नुकसान पहुंचाने वाले कीटों और उन के प्रबंधन के बारे में पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए.

फलमक्खी

यह कद्दू परिवार की सब्जियों जैसे: लौकी, करेला, कद्दू, खीरा, तोरोई, खरबूजा, तरबूज आदि को हानि पहुंचाने वाला प्रमुख कीट है. प्रौढ़ मक्खी भूरे रंग की होती है, जिस के शरीर पर दो पारदर्शक पंख होते हैं और टांगें पीले रंग की होती हैं. सूंडी जिन्हें मैगट कहते हैं, पीले रंग की होती हैं. मैगट के शरीर का अगला हिस्सा मोटा, हलका काला और पिछला हिस्सा बेलनाकार होता है.

नुकसान के प्रकार

फलों को नुकसान मैगट पहुंचाते हैं, जबकि मादा मक्खी अपने नुकीले डंक की सहायता से अंडे देती है, जिस से अंडे दिए गए स्थान पर रस निकलना प्रारंभ हो जाता है. बाद में उस स्थान पर भूरा काला धब्बा बन जाता है.

मक्खी जिस स्थान पर अंडे देती है, उस जगह के ऊतक नष्ट हो जाते हैं. इस से फल टेढ़ेमेढ़े हो जाते हैं. अंडों से सूंड़ियां निकलने के बाद फलों के अंदर घुस कर खाना शुरू कर देती हैं, जिस से फलों में सड़न उत्पन्न हो जाती है और उन का गूदा मटमैला हो जाता है. कीट के प्रकोप के कारण सब्जियां खाने और व्यापार के लायक नहीं रह जाती हैं.

प्रबंधन : खेतों में ग्रीष्मकालीन जुताई करनी चाहिए.

☛ कद्दूवर्गीय सब्जियों को बागों में नहीं लगाना चाहिए.

☛ सूंड़ी और प्यूपा से ग्रसित फलों को एकत्र कर 1.0 मीटर गहरे गड्ढे में दबा देना चाहिए.

☛ गंध पास की सहायता से नर कीटों को एकत्र कर नष्ट कर देना चाहिए.

☛ नर कीटों को आकर्षित करने के लिए मिथाइल यूजीनाल 0.1 फीसदी, एसीटामीप्रिड 0.1 फीसदी को 1 लिटर शीरे के घोल को चौड़े मुंह वाली बोतल में डाल कर 10 शीशी प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए.

☛ मिथाइल यूजीनाल 4 भाग, एल्कोहल 6 भाग और थायोमैथोक्जाम 1 भाग, 5 सैंटीमीटर लंबे और 1 सैंटीमीटर मोटे वर्गाकार प्लाईवुड के टुकड़े को 24 घंटे घोल में डुबो कर प्लास्टिक की बोतल लटका कर प्रयोग करना चाहिए.

☛ यदि कीट का प्रकोप अधिक हो तो थायोमैथोक्जाम दवा की 200 ग्राम मात्रा को 8-10 लटर पानी का घोल बना कर छिड़काव करें.

कद्दू का लाल कीट (लाल सूंड़ी)

इस कीट की ग्रब व प्रौढ़ दोनों ही अवस्था फसलों को हानि पहुंचाती है. इस कीट के प्रौढ़ बेलनाकार, जिन का ऊपरी रंग गेरूआ लाल, पीला होता है.

ग्रब अवस्था पौधों की मुलायम जड़ों को खुरचखुरच कर खाती हैं, जबकि प्रौढ़ कीट पौधों की मुलायम कलिका व पत्तियों को काट कर खाते हैं. इस से पौधों की वृद्धि रुक जाती है और पत्तियां छिद्रयुक्त दिखाई देती हैं. इस कीट का प्रकोप मध्य फरवरी माह से सितंबर माह तक रहता है.

प्रबंधन : फसल खत्म होने पर बेलों को खेत से निकाल कर जला देना चाहिए.

☛ फसल की अगेती बोआई से कीटों के प्रभाव को कम किया जा सकता है.

☛ संतरी रंग के भृंग को सुबह के समय

इकट्ठा कर के नष्ट कर दें.

☛ फसल में इन कीटों की ग्रब अवस्था में जमीन में रह कर जड़ों को काटती हैं, जिस की रोकथाम के लिए क्लोरोपायरीफास 20 ईसी की 2.5 लिटर प्रति हेक्टेयर मात्रा को फसल की बोआई के एक माह बाद सिंचाई जल के साथ प्रयोग करें, जिस से कि पौधों में मौजूद ग्रब लटों को नष्ट किया जा सके.

☛ नीम तेल (नीमारीन) की 5 मिलीलिटर प्रति लिटर पानी की दर से 10 दिन के अंतराल पर खड़ी फसल में छिड़काव करते रहना चाहिए या घर की राखी या जीवामृत का छिड़काव करते रहना चाहिए.

☛ कीट की उग्र अवस्था होने पर फ्रिवोनिल 5 फीसदी एससी 2 मिलीलिटर या इंडोक्जाकार्ब 14.5 एससी की 5 मिलीलिटर के साथ सरफेक्टेंट/स्टीकर 1 मिलीलिटर की मात्रा को मिला कर 5 लिटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए.

अमेरिकन सूंड़ी

यह भिंडी का प्रमुख कीट है. कीट का प्रौढ़ मटमैले रंग का शलभ होता है, जो रात में सक्रिय हो कर प्रकाश की ओर आकर्षित होता है. इस कीट की सूंड़ी का रंग हरा व भूरा होता है.

नुकसान के प्रकार : कीट की सूंड़ी प्रारंभिक अवस्था में पौधों की मुलायम पत्तियों को खा कर नष्ट कर देती है. फल अवस्था में सूंड़ी भिंडी में छेद कर फली के अंदर के गूदे को खा कर नष्ट करती है. ग्रसित फलों में गोलगोल छेद बन जाते हैं, जिन में कीट का मल चिपका रहता है. प्रभावित फलों का बाजार भाव गिर जाता है.

प्रबंधन : ग्रीष्म ऋतु में खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए, जिस से भूमि में पड़े हुए कीट के कोयों की तेज धूप के संपर्क में आने के कारण मृत्यु हो जाए.

☛ कीट आकर्षी फसल गेंदा या कपास को खेत के चारों ओर लगाने से मादा कीट अंडे मुख्य फसल में न दे कर प्रपंची फसल देती है, जिस से मुख्य फसल कीट के प्रकोप से बच जाती है.

☛ परभक्षी चिड़ियों के बैठने के लिए खेत में जगहजगह बर्ड पर्चर लगा देना चाहिए. ये चिड़ियां कीट की सूंड़ियों को खा कर नष्ट कर देती हैं.

☛ परभक्षी प्रपंच/फैरोमौन टेप की सहायता से शलभों को एकत्र कर नष्ट कर देना चाहिए.

☛ नीम की निंबौली का 4.0 फीसदी का घोल बना कर 8-10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए.

☛ एचएएनपीवी का 300 सूंड़ी तुल्यांक, 1.0 किलोग्राम गुड़ और 1.0 फीसदी चिपकने वाला पदार्थ मिला कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें.

☛ ट्राईकोग्रामा काइलोनिस अंड परजीवी के 50,000 अंडे प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अंतराल पर फूल बनते समय 5-6 बार प्रयोग करें.

☛ बैसिलस थ्यूरिजिनेनसिस की 1.0 किलोग्राम मात्रा का प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें.

☛ स्पाइनोसेड की 45 ईसी की 200 मिलीलिटर एमएल मात्रा को 400-600 लिटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें.

☛ अधिक प्रकोप की दशा में फ्लूपेंडाएमाइड की 39.35 फीसदी एससी की 125 मिलीलिटर या इंडोक्जाकार्ब 15.8 फीसदी ईसी की 325 मिलीलिटर मात्रा को 400-600 लिटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें.

चित्तीदार सूंड़ी

वयस्क कीट मध्यम आकार का पतंगा होता है, जिस का सिर और वक्ष पीले रंग का होता है. नवजात इल्लियां भूरे, सफेद रंग की लगभग 9 मिलीमीटर लंबी, जबकि पूरी तरह विकसित इल्लियां 18-20 मिलीमीटर लंबी होती हैं. इल्लियों के पृष्ठ भाग पर छोटेछोटे कड़े बाल होते हैं और बीचबीच में काली व नारंगी धब्बों वाली धारियां भी पाई जाती हैं, इसलिए इसे धब्बों वाली या चित्तीदार इल्ली कहते हैं.

नुकसान के प्रकार : इस कीट की इल्लियां भिंडी के फलों, फूलों, कलियों और पौधों की कोमल टहनियों को नुकसान पहुंचाती हैं. फसल के प्रारंभ में ही जब पौधे दोतीन सप्ताह के होते हैं, उसी समय इल्लियां निकल कर पौधों

के प्ररोहों में छिद्र कर के प्रवेश कर जाती हैं. परिणामस्वरूप, वे मुरझा जाते हैं. इस तरह लगभग 50 प्रतिशत तक फसल नष्ट हो जाती है.

जब पौधों पर फल, कलियां और फल आने लगते हैं तो इल्लियां उन में प्रवेश कर जाती हैं. प्रवेश छिद्र कीट के मलमूत्र से भरे हुए देखे जा सकते हैं. इस कीट के प्रकोप से कलियां नहीं खिलतीं, फूल झड़ने लगते हैं और फल दूषित, छोटे व खाने योग्य नहीं रह जाते हैं.

प्रबंधन : कीट की प्रारंभिक अवस्था में ही प्रभावित प्ररोहों को काट कर नष्ट कर देना चाहिए.

☛ जमीन पर गिरी हुई कलियों और क्षतिग्रस्त फलों को तोड़ कर नष्ट कर देना चाहिए.

☛ खेत में या खेत के चारों ओर उगे हुए परपोषी पौधों को नष्ट कर देना चाहिए.

☛ फसल समाप्त होने के बाद खेत में छूटे हुए फसल के अवशेषों को एकत्र कर के नष्ट कर देना चाहिए.

☛ कीट के आक्रमण की दशा में ट्राइकोग्रामा किलोनिस के 50,000 अंडे/हेक्टेयर की दर से खेत में छोड़ें.

☛ यदि कीटनाशक प्रयोग करने की आवश्यकता हो तो उस दशा में इंडोक्जाकार्ब 15.8 फीसदी ईसी की 325 मिलीलिटर मात्रा या फ्लूवेंडामाइट 480 एससी की 100 मिली मात्रा को 500-600 लिटर पानी में घोल बना कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए.

फुदका

यह कद्दूवर्गीय फसलों को नुकसान पहुंचाने वाला प्रमुख रस चूसक कीट है, जो आकार में छोटा, कोमल शरीर वाला और

हरेपीले रंग का होता है. इसे भुनगा के नाम से भी जाना जाता है. यह अकसर पत्तियों की निचली सतह पर सैकड़ों की संख्या में चिपक कर रस चूसते रहते हैं. पत्तियों को हिलाने पर ये उड़ते हुए दिखाई देते हैं.

नुकसान के प्रकार : कीट के शिशु और प्रौढ़ दोनों पत्तियों की निचली सतह से रस चूस कर नुकसान पहुंचाते हैं. अधिक प्रकोप की दशा में पत्तियां पीली पड़ कर मुरझाना शुरू हो जाती हैं और बाद में सूख जाती हैं. इसे हौपर बर्न की स्थिति कहते हैं. यह कीट अपनी लार से विषैला पदार्थ निकालता है. इस के प्रभाव से पत्तियां जली हुई दिखाई देने लगती हैं.

प्रबंधन : खेत के पास उगे हुए अन्य परपोषी पौधों और खरपतवारों को नष्ट कर दें.

☛ इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल की 125 मिलीलिटर या फिब्रोनिल 1.5 लिटर मात्रा का 500-600 लिटर पानी में घोल बना कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें.

मूल ग्रंथि सूत्रकृमि

वयस्क मादा नाशपाती जैसी गोलाकार 1 से 2 मिलीमीटर लंबी तथा 30 सैंटीमीटर माइक्रोन चौड़ी होती है. नर का शंकु भारी मादा से बड़ा होता है. मादा 250 से 300 अंडे देती है. अंडे के अंदर ही डिंभक प्रथम निर्मोचन की अवस्था पार करते हैं. इन से जो द्वितीय अवस्था के डिंभक बनते हैं, वे मृदा कड़ों के बीच रेंगते रहते हैं और उपयुक्त परपोषी जड़ों से संपर्क होने पर उन से चिपक जाते हैं और जड़ों की बाह्य त्वचा को भेद कर ऊतकों में पहुंच जाते हैं.

परपोषी के अंदर डिंभक में 3 निर्मोचन होते हैं. मादा अनिषेकजनन तरीके से अंडे पैदा कर सकती है. सूत्रकृमि की शोषण क्रिया के फलस्वरूप पौधे के ऊतकों में तेजी से विभाजन होता है और उन की कोशिकाओं का आकार बढ़ जाता है.

इस प्रकार से ग्रंथियां बनती हैं. इन्हीं ग्रंथियों के अंदर सूत्रकृमि एक फसल काल से दूसरी फसल काल तक जीवित रह कर प्रारंभिक आक्रमण करता है.

नुकसान के प्रकार : यह सूत्रकृमि सब्जियों को बहुत अधिक नुकसान पहुंचाता है. इस के कारण जड़ों में छोटीछोटी गांठें बन जाती हैं और पत्तियां पीली पड़ जाती हैं. साथ ही, पौधे की वृद्धि रुक जाती है. नतीजतन, पौधों पर फलों की संख्या कम हो जाती है.

प्रबंधन : उपयुक्त फसल चक्र अपना कर इस का प्रकोप मूल फसल पर कम किया जा सकता है.

☛ गरमियों में खेत की 2 से 3 बार जुताई कर के मिट्टी अच्छी तरह सुखाने से डिंभकों की संख्या को कम किया जा सकता है.

☛ यदि फसल चक्र में अधिक समय तक जल भराव वाली फसल जैसे कि धान ले ली जाए, तो भी इस की संख्या कम की जा सकती है.

☛ मृदा में कार्बनिक पदार्थ जैसे, लकड़ी का बुरादा, नीम की अंडी की खली 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से फसल लगाने से 3 सप्ताह पूर्व खेत में मिला कर मूल ग्रंथियों की संख्या कम की जा सकती है.

☛ प्रतिरोधी प्रजाति का प्रयोग करना चाहिए.

☛ अधिक प्रकोप होने पर कार्बोफ्यूरान 3 जी की 30-35 किलोग्राम मात्रा को हेक्टेयर की दर से खेत में प्रयोग करना चाहिए. ■

किसानों को लाभ देने के लिए ई-नाम को मजबूत करना जरूरी

-नरेंद्र तोमर सिंह (केंद्रीय कृषि मंत्री)

नई दिल्ली : केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने बताया कि इलैक्ट्रोनिक नैशनल एग्रीकल्चर मार्केट (ई-नाम) प्लेटफार्म के साथ 117 अतिरिक्त थोक मंडियों का एकीकरण किया गया है, जिस के बाद देशभर में औनलाइन मंडियों की कुल संख्या 962 तक पहुंच गई है.

एक सरकारी बयान में कहा गया है कि ई-नाम प्लेटफार्म के साथ इन एकीकृत अतिरिक्त मंडियों में गुजरात की 17, हरियाणा की 26, जम्मू और कश्मीर की एक, केरल की 5, महाराष्ट्र की 54, ओडिशा की 15, पंजाब की 17, राजस्थान की 25, तमिलनाडु की 13 और पश्चिम बंगाल की एक मंडी शामिल है.

इस समय किसान अपनी कृषि उपज की नीलामी देशभर में मौजूद 6,900 एपीएमसी (कृषि उपज विपणन समितियों) मंडियों में करते हैं. कुछ किसान ई-नाम प्लेटफार्म के माध्यम से औनलाइन बोली कर के बेच रहे हैं.

वीडियो कौंफ्रैंसिंग के माध्यम से नई मंडियों का शुभारंभ करते हुए नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि किसान को लाभ पहुंचाने के लिए ई-नाम को और मजबूत करने के प्रयास किए जाने चाहिए.

उन्होंने कहा कि ई-नाम के साथ एपीएमसी मंडियों का एकीकरण करने से किसानों को औनलाइन पोर्टल के माध्यम से अपनी उपज को बचने की सुविधा मिलेगी. 15 मई से पहले 1,000 मंडियों को जोड़ने का लक्ष्य है.

मौजूदा कोविड-19 की स्थिति में अधिक मंडियों को एकीकृत किया जा रहा है, क्योंकि ई-नाम मंच पर बोली लगाने के लिए नीलामी स्थल

के पास खरीदार या व्यापारी की भौतिक उपस्थिति जरूरी नहीं है. इलैक्ट्रोनिक प्लेटफार्म ई-भुगतान सुविधा भी प्रदान करता है, जिस के माध्यम से व्यापारी किसानों को अपने घर या कार्यालय, किसी भी स्थान से उन का भुगतान कर सकते हैं और इस प्रकार भीड़ से बचा जा सकता है.

कोविड-19 की वजह से लौकडाउन की स्थिति के दौरान मंडियों में भीड़भाड़ को कम करने के लिए सरकार ने ई-नाम मंच पर लौजिस्टिक्स समर्थन के अलावा गोदामों से सीधे व्यापार के साथसाथ किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के संग्रह केंद्रों से सीधा कारोबार करने की नई सुविधाएं शुरू की हैं.

मंत्रालय के अनुसार, 1.66 करोड़ किसान, 1.30 लाख व्यापारी और 71,911 कमीशन एजेंट ई-नाम मंच का उपयोग कर रहे हैं. इस साल 9 मई तक ई-नाम मंच पर एक लाख करोड़ रुपए से अधिक की वस्तुओं का कारोबार किया गया है.

इस के अलावा ई-नाम मंच के माध्यम से 708 करोड़ रुपए के डिजिटल भुगतान किए गए, जिस से 1.25 लाख से अधिक किसान लाभान्वित हुए. 12 राज्यों में अंतरमंडी व्यापार में कुल 236 मंडियों ने भाग लिया, जबकि 13 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों ने व्यापार में भाग लिया, जिस से किसानों को दूर स्थित व्यापारियों के साथ सीधे बातचीत करने का मौका मिला.

मौजूदा समय में ई-नाम पर खाद्यान्न, तिलहन, फाइबर, सब्जियों और फलों सहित 150 वस्तुओं का कारोबार किया जा रहा है. ई-नाम मंच पर 1,005 से अधिक एफपीओ पंजीकृत किए गए हैं और इस ने 7.92 करोड़ रुपए की 2,900 टन कृषि उपज का कारोबार किया है. ■

समय रहते टिड्डी की रोकथाम करें

-लालचंद कटारिया, कृषि मंत्री, राजस्थान

जयपुर : कृषि मंत्री लालचंद कटारिया ने कृषि विभाग के अधिकारियों को टिड्डी चेतावनी संगठन (एलडब्ल्यूओ) के साथ समन्वय कर प्रभावी टिड्डी प्रबंधन एवं नियंत्रण करने के निर्देश दिए. उन्होंने इस के लिए काश्तकारों का भी पूरा सहयोग लेने को कहा.

उन्होंने बताया कि फसलों को बचाने के लिए समय रहते टिड्डी पर नियंत्रण जरूरी है. इस के लिए राज्य सरकार हरसंभव संसाधन उपलब्ध करा रही है.

इस बारे में उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने टिड्डी चेतावनी संगठन को 40 गाड़ियां उपलब्ध कराई हैं. 600 ट्रैक्टर किराए पर लेने की स्वीकृति जारी की गई है. उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार से भी अतिरिक्त संस्थान उपलब्ध कराने का आग्रह किया गया है.

उन्होंने कहा कि पर्याप्त मात्रा में पैस्टिसाइड्स उपलब्ध हैं. जहां भी पैस्टिसाइड्स की जरूरत हो, वह तुरंत बताएं. वाहन, पैस्टिसाइड्स और दूसरे

संसाधनों की कमी में कहीं भी टिड्डी अनियंत्रित नहीं होनी चाहिए.

कृत्रि मंत्री ने कहा कि कृषि विभाग के अधिकारी टिड्डी चेतावनी संगठन के अधिकारियों के साथ निरंतर समन्वय बनाए रखें, साथ ही प्रगतिशील काश्तकारों का भी पूरा सहयोग लें.

प्रभावित क्षेत्र में 138 सर्वे टीम लगाईं, 45 गाड़ियों से किया कीटनाशक स्प्रे : कृषि आयुक्त डा. ओमप्रकाश ने बताया कि राज्य के गंगानगर, बाड़मेर, जोधपुर, नागौर और अजमेर जिले टिड्डी से प्रभावित हैं. विभागीय टीमें पूरी सजगता के साथ सर्वे कर प्रभावी टिड्डी नियंत्रण कर रही हैं. प्रभावित क्षेत्र में 138 सर्वे टीम लगी हुई हैं. टिड्डी चेतावनी संगठन की ओर से 45 गाड़ियों के माध्यम से कीटनाशक स्प्रे का काम किया जा रहा है. ■

जानकारी

किसानों को मिलेगा मुआवजा

लखनऊ : आंधीपानी व ओलावृष्टि से फसल को हुए नुकसान का प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसानों को मुआवजा मिलेगा. जिन किसानों ने योजना के तहत फसलों का बीमा करवाया था, उस का ब्योरा बीमा कंपनियों से मांगा गया है.

निदेशक, कृषि सांख्यिकी व फसल बीमा विनोद कुमार ने बताया कि जिन किसानों ने फसल का बीमा करवाया था, अगर कटाई के बाद उन की फसल 14 दिन तक सुखाई के लिए खेत में पड़ी रही और इस दौरान ओलावृष्टि व आंधीतूफान से उन का नुकसान हुआ तो बीमा कंपनियां किसान को मुआवजा देंगी. ■

सावधानी

गन्ने के नए कीटों से किसान रहें सावधान

शाहजहांपुर : उत्तर प्रदेश गन्ना शोध परिषद के निदेशक डा. जे. सिंह ने बताया कि गन्ने की फसल में एक नए कीट फाल आर्मी वर्म का प्रकोप हाल ही में प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्रों में देखने को मिला है.

यह कीट मुख्य रूप से अमेरिकी मूल का विनाशकारी कीट है और मक्के की फसल को नुकसान पहुंचाता है, परंतु मक्का फसल की अनुपलब्धता की दशा में यह गन्ना, ज्वार और दूसरी फसलों पर आक्रमण करता है. अपने देश में गन्ने की फसल में इस कीट का प्रकोप सर्वप्रथम तमिलनाडु राज्य में देखा गया है.

इस कीट के बारे में विस्तार से बताते हुए डा. जे. सिंह ने कहा कि इस कीट के प्रौढ़ (वयस्क) तीव्र उड़ान वाले होते हैं, जो भोजन (मेजबान पौधे) की तलाश में 100 किलोमीटर से भी अधिक उड़ सकते हैं. इस कीट की 4 अवस्थाएं होती हैं, अंडा, लर्वा (सूंड़ी),

प्यूपा और वयस्क. इस कीट की एक मादा 1,000 से अधिक अंडे देती है जो 50-200 के अंडे समूहों में होते हैं. अंडे से 4-6 दिन में सूंड़ी निकलती है. सूंड़ी की अवस्था 14-18 दिन की होती है और इसी अवस्था में यह कीट फसल को नुकसान पहुंचाता है. सूंड़ी की त्वचा मुलायम होती है, जो बढ़वार के साथ हलके हरे या गुलाबी से भूरे रंग की होती है. सूंड़ी नवजात पौधों की गोंफ को हानि पहुंचाती है और बाद में पौधों की पत्तियों की मध्य शिरा को छोड़ कर पूरी पत्ती खा जाती है.

डा. जे. सिंह ने किसानों को सलाह दी कि गन्ने की फसल पर दिन में सूंड़ियों द्वारा पत्तियों को खाते हुए देखें, तो संबंधित चीनी मिल, गन्ना विकास परिषद अथवा परिषद की हैल्पलाइन 05842-222509 पर संपर्क करें.

-जे. सिंह, निदेशक, उत्तर प्रदेश गन्ना शोध परिषद. ■

इस तरह करें नियंत्रण

डा. जे. सिंह ने बताया कि क्विनालफास 25 ईसी की दर से 800 मिलीलिटर प्रति हेक्टेयर अथवा प्रोफेनोफास 40 फीसदी, साइफर 4 फीसदी की दर से 750 मिलीलिटर प्रति हेक्टेयर अथवा क्लोरोपायरीफास 20 फीसदी ईसी की दर से 800 मिलीलिटर प्रति हेक्टेयर को 625 मिलीलिटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करना चाहिए.

उन्होंने कहा कि इस की सूंड़ी के तीसरे और चौथे इंस्टार द्वारा नुकसान होने पर लोरेंट्रोनिलिप्रोल 18.5 एससी की दर से 250 मिलीलिटर प्रति हेक्टेयर को 625 लिटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करने से कीट को नियंत्रित किया जा सकता है.

मदद

सभी किसान नहीं उगा पाएंगे धान

फतेहाबाद : रतिया खंड में जिस किसान ने 50 हौर्सपावर से ऊपर के ट्यूबवैल का कनैक्शन लिया हुआ है, वे इस बार धान की खेती नहीं कर पाएंगे. इस के अलावा प्रदेश सरकार रतिया के 38 हजार एकड़ में धान की बिजाई नहीं करने देगी. यह फैसला धान के कारण भूजल के ज्यादा दोहन को देखते हुए लिया गया है.

रतिया खंड में भूजल स्तर 42 मीटर से भी नीचे है. रतिया में 50 हौर्सपावर व इस से ऊपर ट्यूबवैल कनैक्शनों की संख्या तकरीबन 825 है. सरकार ने धान की खेती कम करने वाले किसानों को 7 हजार रुपए प्रति एकड़ प्रोत्साहन राशि देने का फैसला भी किया गया है.

कृषि विभाग के उपनिदेशक डा. राजेश सिहाग ने इस की पुष्टि की है. अगर कोई किसान धान की खेती करता पाया गया तो निगम उस का कनैक्शन काट देगा. प्राप्त जानकारी के अनुसार रतिया क्षेत्र में इस समय 78 हजार एकड़ भूमि पर धान की खेती की जा रही है. धान की फसल में पानी की ज्यादा लागत के कारण यहां का भूजल स्तर भी गिरता जा रहा है.

फतेहाबाद जिले में रतिया खंड में अब सरकार ने 78 हजार एकड़ भूमि की जगह धान की रोपाई कम कर के 39 हजार एकड़ से भी कम करने का लक्ष्य रखा है. सरकार ने बाकी 39 हजार एकड़ के जमीदारों को सलाह दी है कि वह धान की जगह नरमा, मक्का, बाजरा, मूंग दाल की बिजाई करे व 7,000 रुपए की प्रोत्साहन राशि सरकार से प्राप्त करे.

सरकार ने यह फैसला लिया कि जिन किसानों ने अपने खेतों में 50 हौर्सपावर या उस से अधिक का ट्यूबवैल का कनैक्शन ले रखा है, वे धान की बिजाई नहीं कर सकेंगे.

गिरदावरी से पता लगेगा कि किस ने की धान खेती कम की. कृषि विभाग के अनुसार, जिन किसानों ने वर्ष 2019-20 में धान लगाया था, अब उन की गिरदावरी की जाएगी. साल 2020-21 में

धान न लगाने वाले किसानों की निशानदेही कर के कृषि एवं कल्याण विभाग को उस की रिपोर्ट भेजी जाएगी, जिस के आधार पर सरकार उन के खातों में 7,000 रुपए की प्रति एकड़ प्रोत्साहन राशि डालेगी. ■

मुसीबत

फिर छाया टिड्डी का खतरा

– **प्रमोद कुमार,** संयुक्त निदेशक, कृषि विभाग खंड, सीकर

नागौर : पाकिस्तान के सीमावर्ती बाड़मेर, जालोर आदि जिलों में कहर बरपा चुका टिड्डी दल अब नागौर में घुस चुका है. हालांकि जिले में अभी तक किसी नुकसान के समाचार नहीं हैं, लेकिन कृषि विभाग में हड़कंप मच चुका है. निगरानी और रोकथाम के लिए तत्काल ही कंट्रोल रूम स्थापित कर दिए हैं. वहीं सर्वेक्षण दल की ओर से टिड्डियों की ट्रैकिंग और नियंत्रण के उपाय किए जा रहे हैं.

टिड्डी दल नागौर जिले में जोधपुर के रास्ते से घुसा है. तकरीबन 2 किलोमीटर लंबा यह दल खींवसर तहसील के गांवों से होते हुए आगे बढ़ रहा है. रात में टिड्डियों के पड़ाव वाली जगह पर नियंत्रण का काम करने का दावा किया जा रहा है. कृषि अधिकारियों ने किसानों से आग्रह किया है कि टिड्डी दल दिखाई देने पर तत्काल ही नियंत्रण कक्ष को सूचना दें, ताकि समय रहते कंट्रोल किया जा सके.

इन गांवों से घुसा टिड्डी दल: नागौर जिले में पिछले दिनों जोधपुर जिले से सटी सीमा से होते हुए टिड्डी दल घुसा. इस क्षेत्र में कुडछी, नारवा कलां, अखावास, लुणावास, कांठिया, आंकला, हमीराणा, सिणोद, बूढ़ी, बसवाणी सहित खींवसर तहसील के गांवों से होते हुए दल आगे बढ़ता रहा.

कृषि विभाग की ओर से गठित टिड्डी सर्वेक्षण दल टिड्डियों का ट्रैकिंग सर्वे कर रहा है. रात में पड़ाव वाले स्थानों पर टिड्डी नियंत्रण विभाग के सहयोग से रोकथाम के काम किए जाएंगे.

एहतियात के तौर पर जिले में कंट्रोल रूम स्थापित किए गए हैं, ताकि कहीं भी टिड्डी दल दिखाई दे तो तत्काल सूचना मिल सके. जिला मुख्यालय स्थित कृषि विभाग

कार्यालय, मेड़ता सिटी व कुचामन सिटी स्थित सहायक निदेशक कार्यालय, नागौर के बासनी रोड स्थित टिड्डी मंडल कार्यालय में नियंत्रण कक्ष स्थापित किए हैं. किसानों से आग्रह किया है कि टिड्डी दिखने पर तत्काल सूचना दी जाए.

टीम सक्रिय है... जिले में टिड्डी दल आने की सूचना मिलते ही कृषि विभाग की स्थानीय टीम सक्रिय हो गई है. फील्ड में किसानों और टिड्डी विभाग के साथ मिल कर लगातार काम किया जा रहा है. शीघ्र ही टिड्डी दल को समाप्त करने के लिए कीटनाशकों का छिड़काव कराया जाएगा. ■

फैसला

किसान की मरजी से होगा फसल बीमा

रायपुर : बैंक लोन वाले किसानों को फसल बीमा के लिए पंजीयन अब अनिवार्य नहीं होगा. बीमा पौलिसी में हुए बदलाव से लोन लेने वाले किसानों को अब मजबूरी में बीमा कराने की बाध्यता समाप्त कर दी गई. बीमा पौलिसी में बदलाव से जिले के तकरीबन 78,000 किसानों को फायदा होगा. बदले नियमों के मुताबिक खरीफ सीजन में खेती के लिए लोन लेते समय उन्हें अपनी फसल का बीमा करवाना अनिवार्य नहीं होगा.

पीएम फसल बीमा में किए बदलाव के कारण ऐसा हो पाया है. अब तक लोन लेने वाले किसानों के लिए फसल बीमा एक तरह से मजबूरी ही थी. अब किसान चाहे तो बीमा करवाए या फिर नहीं.

कृषि विभाग के अफसरों ने

बताया कि नए नियमों के तहत किसान जितने खेत रकबा का बीमा करवाना चाहते हैं, उतना अपना करवा सकते हैं.

होता था कंपनी को फायदा : फसल बीमा के लिए अधिकृत बीमा कंपनी किसानों से बीमा प्रीमियम के पैसे लेती है और बाकी का अंशदान केंद्र व राज्य सरकार से भी लेती रही हैं. इस की वजह से जितने किसानों का नुकसान नहीं होता था, उन किसानों के हिस्से का रकम भुगतान सरकार कर रही थी.

मिलेगी लोन की पूरी रकम : जिले में ज्यादातर किसान ऐसे भी हैं, जो सिंचित क्षेत्र में होने की वजह से सूखे या प्राकृतिक आपदा से दूर हैं और उन्हें बीमा क्लेम की जरूरत नहीं है, लेकिन लोन लेते ही बीमा की रकम खाते से काट ली जाती थी. इस अनिवार्यता की मजबूरी के कारण बीमा कराना पड़ता था, लेकिन इस बदलाव से उन्हें लोन की रकम पूरी मिलेगी.

पीएम फसल बीमा में कुछ बदलाव हुआ है. अब इस खरीफ सीजन से लोन लेते समय किसानों को फसल बीमा करवाना अनिवार्य नहीं है. इसे स्वैच्छिक कर दिया गया है. ■

नाउम्मीद

कृषि मजदूरों की कमी

चंडीगढ़ : किसान संगठनों की चिंता और मजदूरों की कमी को देखते हुए मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने धान की रोपाई का समय 10 जून से करने का ऐलान किया है. पिछले साल 20 जून से इजाजत दी गई थी. सरकार सीधी बोआई का मैडल अपनाने पर जोर दे रही है.

इस पर भारतीय किसान यूनियन के प्रधान बलबीर सिंह राजेवाल ने

कहा कि पंजाब का किसान प्रगतिशील है और यदि सरकार सीधी बोआई का मौडल अपनाना चाहती है, तो दस मई से किसानों को 8 घंटे बिजली दी जाए.

उन्होंने कहा कि धान की रोपाई व सीधी बिजाई की मशीनरी के लिए किसानों की मदद की जानी चाहिए. धान की समय पर बिजाई को पुख्ता बनाने के लिए किसानों को हर तरह का सहयोग देने के लिए कैप्टन अमरिंदर सिंह ने पंजाब राज्य पावर कार्पोरेशन लिमिटेड को लगातार बिजली देने के निर्देश दिए.

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने कहा कि किसान कम समय में तैयार होने वाली किस्मों को अपनाते हैं, जो 100 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है. धान की रोपाई मध्य जून से पहले होने से फसल पहले तैयार हो जाएगी. सितंबर के दूसरे हिस्से तक जाने वाली मानसून की अनिश्चित परिस्थितियों का भी फसल पर प्रभाव हो सकता है.

धान की जल्द रोपाई से भूजल के पहले से ही घट रहे स्तर पर और प्रभाव पड़ सकता है. लेबर की कमी पर उन्होंने कहा कि स्थानीय कामगार भी धान की रोपाई के काम के लिए आगे आ सकते हैं. ■

खुशखबरी

कोरोना के विरुद्ध मुख्यमंत्री कोष में दी 10 करोड़ की राशि

उदयपुर/बाड़मेर : कोरोना महामारी के खिलाफ लड़ाई में राजस्थान सरकार की मदद के लिए सभी क्षेत्रों से जुड़े लोग और संगठन आगे आ रहे हैं.

इस अभियान में वेदांता समूह की राजस्थान स्थित 2 कंपनियों, केयर्न औयल गैस और हिंदुस्तान जिंक ने राजस्थान मुख्यमंत्री सहायता कोष में 10 करोड़ रुपए का योगदान दिया है. यह योगदान उस लगभग 8 करोड़ की राशि के अतिरिक्त है, जो दोनों कंपनियां अपने परिचालन क्षेत्रों में सामुदायिक प्रयासों के दौरान खर्च कर रही हैं.

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इन चुनौतीपूर्ण समय के दौरान राज्य को समर्थन देने के लिए वेदांता समूह के प्रयासों की प्रशंसा की है. बाड़मेर और उदयपुर में संचालित इन दोनों कंपनियों ने इस अवधि में न्यूनतम कार्मिकों और कड़े स्वास्थ्य सुरक्षा प्रोटोकौल के साथ इस चुनौतीपूर्ण समय में केवल सुरक्षित उत्पादन पर ध्यान देने के साथ संचालन जारी रखा है. इस के अलावा वे स्थानीय लोगों और समुदायों की मदद करने के लिए जागरूकता फैलाने और सीएसआर कामों के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा और स्वच्छता के क्षेत्रों में स्थानीय प्रशासन के प्रयासों में भागीदारी निभा रहे हैं.

कोरोना के विरुद्ध अभियान में राजस्थान सरकार और जिला प्रशासन ने प्रभावी कदम उठाए हैं. सरकार के स्तर पर लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए बचाव के उपाय लागू किए गए हैं.

वेदांता लिमिटेड के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने कहा, ''कोरोना वायरस महामारी से लड़ने के लिए सामूहिक प्रयास करने का समय है, ताकि हम एक महत्त्वपूर्ण बदलाव ला सकें. हम कई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, लेकिन हमारे लिए देश का हित पहली प्राथमिकता है.

''वेदांता का राजस्थान के साथ एक लंबा और फलदायी संबंध रहा है. राजस्थान के लोगों और विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता अटूट है. हम इस महामारी से लड़ने और जल्द से जल्द सामान्य स्थिति बहाल करने में राज्य और जिला प्रशासन का सहयोग करने के लिए तत्पर हैं.''

इस अभियान में नंद घर भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं. नंद घर के रूप में अत्याधुनिक आंगनबाड़ियों को भारत में ग्रामीण बच्चों और महिलाओं को लाभ पहुंचाने के लिए समर्पित और परिवर्तनकारी कदम माना जा रहा है.

राजस्थान में पहले से ही 914 नंद घर, आधुनिक आंगनबाड़ी 11 जिलों में चल रही हैं. इन नंद घर का लक्ष्य 36,500 से अधिक बच्चों और 27,000 से अधिक महिलाओं को प्रभावित करना है.

इस के अतिरिक्त वेदांता फाउंडेशन राजस्थान के रींगस में 1995 से अधिस्नातक महिला महाविद्यालय संचालित कर रहा है.

इस कालेज की 3000 विद्यार्थी निकटवर्ती समुदायों में सूखा राशन, स्वनिर्मित सैनेटाइजर और मास्क वितरित करते हुए महत्त्वपूर्ण सहयोग दे रहे हैं.

सरकारी निर्देशों के अनुसार, हिंदुस्तान जिंक ने कोविड-19 महामारी से संबंधित सभी प्रोटोकौल को अपनाते हुए अपना परिचालन शुरू कर दिया है. कर्मचारी सुरक्षा और स्वच्छता पर कोई समझौता नहीं किया गया है और कंपनी ने जनहित में संचालन जारी रखा है और आर्थिक मंदी को कम करने में मदद करती है.

कोरोना वायरस महामारी से निबटने के लिए हिंदुस्तान जिंक, राजस्थान के 6 जिलों के 189 गांवों और उत्तराखंड के पंतनगर में काम कर रहा है. यह 30,000 से अधिक परिवारों को सूखे राशन के रूप में समुदाय के लिए राहत उपायों का विस्तार कर रहा है और 'द ग्रेन बैंक' पहल के तहत समुदाय में अनाज का योगदान करने के लिए लगभग 20,000 महिलाओं को स्वयंसहायता समूहों के जरीए जुटाया है.

तेल और गैस का उत्पादन मिशन महत्त्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि श्रेणी में आता है, जिसे देश को अर्थव्यवस्था चलाने के लिए जारी रखना चाहिए, इसलिए कंपनी के 'ऊर्जा योद्धा', जो सामान्य रूप से तैनात कार्यबल का सिर्फ 7वां हिस्सा ही हैं, वे भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए उत्पादन को बनाए रखने के लिए अपने नियमित शिफ्ट औफ ड्यूटी से परे जा रहे हैं. राजस्थान के अधिकांश विपुल तेल क्षेत्रों के लिए, इस का मतलब है कि महत्त्वपूर्ण नौकरियां, उत्पादन, राजस्व और इस से जुड़ी क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को बनाए रखना.

-मोईनुद्दीन चिश्ती ■

तकनीक

बनाएं ह्वाट्सएप ग्रुप : सूर्य प्रताप शाही कृषि मंत्री, उत्तर प्रदेश

लखनऊ : कोविड-19 के दृष्टिगत देशव्यापी लौकडाउन में किसानों को खेतीकिसानी से जुड़ी कोई असुविधा न हो, इस के लिए उत्तर प्रदेश सरकार निरंतर प्रयासरत है.

प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि एक ह्वाट्सएप ग्रुप बनाया जाए. इस ग्रुप का उपयोग किसानों को कृषि तकनीकी की जानकारी मुहैया कराने के लिए किया जाएगा. ह्वाट्सएप ग्रुप में सभी संबंधित विभाग के अधिकारियों के साथ जनपद स्तर के कृषि अधिकारियों को जोड़ा जाएगा. न्याय पंचायत स्तर पर तकनीकी सहायक 8-10 किसानों का एक ग्रुप बना कर उन्हें खेती के कामों से संबंधित तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराएं.

उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि किसानों को समय से खाद और बीज उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें. साथ ही, अपनेअपने क्षेत्र के किसानों की मांग के अनुसार फसलों की लोकप्रिय वैराइटी के बीज की डिमांड उपलब्ध कराएं.

कृषि मंत्री ने कहा कि धान और दलहन की फसलों के लिए तकनीकी प्रयोग की भी जानकारी किसानों को दी जाए, ताकि बीज और खाद की लागत कम हो. ■

तकनीक

आढ़ती करेंगे ई-पोर्टल से भुगतान

शाहाबाद : अब आढ़तियों को नए खाते खुलवाने की कोई जरूरत नहीं है और आढ़तियों को ई-खरीद पोर्टल के माध्यम से किसानों को भुगतान करना होगा.

अब ई-खरीद पोर्टल शुरू हो जाने से नया खाता खुलवाने की जरूरत नहीं है और जिस आढ़ती का जिस बैंक में खाता है, वह मान्य है. हर आढ़ती को लौगइन आईडी दी गई है. आढ़ती नैटबैंकिंग या चालान निकाल कर भुगतान कर सकता है. जिस आढ़ती ने किसान से पैसे लेने हैं, उस के लिए किसान से हस्ताक्षर किया हुआ सहमतिपत्र इस पोर्टल पर अपलोड करना पड़ेगा. ■

उपलब्धि

7 फुट की धनिया फसल

देहरादून : क्या आप ने कभी सोचा होगा कि धनिया का पौधा 7 फुट ऊंचा भी हो सकता है ? यानी धनिया के पौधे की ऊंचाई सामान्य आदमी की ऊंचाई से ज्यादा भी हो सकती है. धनिया के पौधे की औसत ऊंचाई 60 सैंटीमीटर होती है.

जी हां, यह सच कर दिखाया है, उत्तराखंड के एक किसान ने. खास बात, यह पौधा पूरी तरह आर्गेनिक है इस पौधे को 7 फुट की ऊंचाई देने के लिए किसी प्रकार के रसायन की मदद नहीं ली गई है.

गोपाल उप्रेती और उन के पौधे का लोहा पूरी दुनिया ने माना है, तभी तो उन का नाम 'गिनीज बुक औफ वर्ल्ड रिकौर्ड' में दर्ज हुआ है. अल्मोड़ा जिले के रानीखेत में रहने वाले किसान गोपाल उप्रेती ने धनिया का यह 7 फुटा पौधा उगाया है. ■

जानकारी

अब किसान कार्ड से खरीदें घर का सामान

नई दिल्ली : केंद्र सरकार ने कोरोना वायरस के चलते किसानों को एक और बड़ा तोहफा दे दिया है. किसानों को हो रही परेशानी के मद्देनजर अब सरकार ने एक और काम की हरी झंडी दे दी है. जिन किसानों के पास किसान क्रेडिट कार्ड है, अब वे इस का इस्तेमाल घर की जरूरतों को भी पूरा करने के लिए कर सकते हैं.

रिजर्व बैंक ने जानकारी देते हुए कहा है कि अब देशभर के किसान अपने क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए कर सकते हैं.

आमतौर पर किसान क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल फसल को तैयार होने वाले खर्चों को पूरा करने के लिए किया जाता है, लेकिन कुल राशि का 10 फीसदी किसान घर में भी कर सकते हैं.

साल 1998 में शुरू हुई थी यह योजना : किसान क्रेडिट कार्ड योजना 1998 में शुरू हुई थी. यह किसानों की खेती से संबंधित खर्चों को पूरा करने के लिए जारी किया गया था. किसान इस कार्ड के जरीए प्रति सीजन 3 लाख रुपए तक का लोन ले सकते हैं. लोन की किस्त को चुकाने पर बैंक की तरफ से कई तरह के फायदे भी मिलते हैं.

हाल ही में रिजर्व बैंक ने बैंकों से केसीसी योजना पर 2 फीसदी ब्याज को मुक्त करने और भुगतान करने पर 2 फीसदी की राहत देने की घोषणा को आगे बढ़ाने को कहा था. यह घोषणा उन किसानों के लिए थी, जिन को 1 मार्च, 2020 से 31 मई, 2020 के बीच भुगतान करना था. ■

मिसाल

छोहाड़ी देवी को राष्ट्रीय स्तर पर 'अर्थ डे स्टार' घोषित किया

गोरखपुर : 52 साल की छोहाड़ी देवी प्रगतिशील महिला किसान हैं, जो गोरखपुर के विकासखंड जंगल कौड़िया में स्थित पचगांवा गांव में रहती हैं. मुख्यत: खेती पर आधारित आजीविका से जीवन चलाने वाली छोहाड़ी देवी के पास पुश्तैनी जमीन मात्र 2 बीघा है, जो बाढ़ और जलजमाव वाले क्षेत्र में है. अपने 8 सदस्यीय परिवार का भरणपोषण करने के लिए इन को कठिन परिश्रम करना पड़ता था.

इन्होंने बहुत संघर्ष कर के गांव के प्रधान से अपने नाम 1.5 बीघा खेत पट्टा कराया और उस पर स्वयं खेती करने लगीं. इन्होंने अपने घर के आंगन में छोटी सी गृहवाटिका बना रखी है और उस में लौकी, कोहड़ा, धनिया, लहसुन, मूली, साग आदि घर के उपयोग के लिए उगाती हैं और अपने 1.5 बीघा खेत में ये साल में 20-25 प्रकार की फसलें उगाती हैं और बोआई के लिए बीज से ले कर विपणन तक के सभी कामों को करने के लिए सारे फैसले यही लेती हैं.

साल 2013 में गोरखपुर एंवायरमेंटल ऐक्शन ग्रुप के संपर्क में आई छोहाड़ी देवी गांव में गठित जय मां लक्ष्मी स्वयंसहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं और संस्था से संचालित हलदी प्रसंस्करण इकाई में सचिव हैं. इस के साथ ही पचगांवा में स्थित कृषि सेवा केंद्र की संचालक भी हैं.

कृषि सेवा केंद्र के माध्यम से अपने गांव सहित आसपास के 3 गांवों में 400-500 किसानों को बीज, खाद, नीम की खली, कीटनाशक और खेती के छोटेछोटे यंत्र संबंधी सेवाएं दे रही हैं.

छोहाड़ी देवी ने संस्था के माध्यम से विभिन्न प्रकार की जैविक खाद बनाने पर प्रशिक्षण प्राप्त किया और अपने खेतों में जैविक खाद का उपयोग करती हैं. जैविक खाद का वे उपयोग कर रही हैं. इस प्रकार खाद के लिए बाजार पर उन की निर्भरता घटी है और अपनी खेती की लागत में 30 फीसदी तक की कमी दर्ज की है.

पचगांवा गांव में स्थित हलदी प्रसंस्करण इकाई में क्रयविक्रय समिति में छोहाड़ी देवी समूह के साथ मिल कर गांव में अगरबत्ती बनाने के काम में लगी हैं, जिसे पैक कर आसपास स्थित बाजारों पीपीगंज और जसवल में बेचने का काम करती हैं. इन्होंने समूह की आयजनक गतिविधियों के माध्यम से लगभग 24 परिवारों को आजीविका दी है.

छोहाड़ी देवी आज गांव में गरीब महिलाओं के लिए खेती और स्वरोजगार दोनों में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं. उन के नेतृत्व में गांव और उस के आसपास के गांवों की महिलाएं संगठित हो कर अपनी समस्याओं के लिए आवाज उठा रही हैं.

इन के इस कार्य को देखते हुए 'अर्थ डे नैटवर्क' ने छोहाड़ी देवी को राष्ट्रीय स्तर पर 'अर्थ डे स्टार' घोषित किया है. ■

ऐलान

46 कृषि जिंसों पर मंडी शुल्क और विकास शुल्क समाप्त

☛ उत्तर प्रदेश राज्य में वर्तमान तक अधिसूचित 116 कृषि उत्पादों के व्यापार पर मंडी शुल्क और विकास शुल्क आरोपित किया जाता है, जो आमतौर पर 2.0 फीसदी मंडी शुल्क और 0.5 फीसदी विकास शुल्क के रूप में कुल 2.5 फीसदी होता है. उपरोक्त 116 अधिसूचित उत्पादों में से कुल 53 कृषि उत्पाद फल और सब्जी की श्रेणी में आते हैं.

☛ राज्य सरकार द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार, उपरोक्त 53 फल और सब्जी के कृषि उपजों में से कुल 7 कृषि उपजों आलू, प्याज, टमाटर, लहसुन, अदरक, मिर्च और नीबू को छोड़ कर 46 अन्य कृषि उपज (1. आम, 2. सेब, 3. हरी मटर, 4. केला, 5. अनार, 6. बंदगोभी और फूलगोभी, 7. मौसम्मी, 8. अंगूर, 9. पपीता, 10. तरबूज, 11. नारंगी, 12. बैगन, 13. ककड़ीखीरा, 14. कद्दू, 15. लौकी, 16. गाजर, 17. अरवी, 18. अमरूद, 19. मूली, 20. पेठा, 21. भिंडी, 22. परवल, 23. कटहल (कच्चा), 24. करेला, 25. किन्नू, 26. खरबूजा, 27. तोरई, 28. शकरकंद, 29. चीकू, 30. लीची, 31. आंवला, 32. कुंदरू, 33. नाशपाती व नाख, 34. जिमीकंद, 35. टिंडा, 36. बेर, 37. माल्टा, 38. आड़ू, 39. हरी लोबिया, 40. कटहल पक्का, 41. चकोतरा, 42. लोकाट, 43, खुबानी, 44. ब्रोकली, 45. सिंघाड़ा, 46. ग्रेप फ्रूट) को गैरअधिसूचित कर दिया गया है, जिस के फलस्वरूप उन पर लगने वाला 2.5 फीसदी का शुल्क अब देय नहीं होगा और इन 46 कृषि उत्पादों का पूरे प्रदेश में मंडी शुल्क के बिना मुक्त व्यापार किया जा सकेगा.

☛ इस से शीघ्र नाशवान होने वाले इन फल और सब्जियों का व्यापार बिना किसी विलंब के शीघ्रता से किया जा सकेगा. उपरोक्त जिंसों में प्रदेश में प्रमुखता में उत्पादित होने वाले केला व आम भी सम्मिलित हैं. आम के उत्पादकों को इस समय इस नीति का और भी अधिक लाभ प्राप्त हो सकेगा.

☛ उपरोक्त कृषि उपजों के व्यापार के लिए जो मंडी स्थल पूर्व से निर्मित हैं, उन परिसरों में इन फल सब्जियों का व्यापार बिना किसी मंडी शुल्क के अभी भी किया जा सकेगा. राज्य सरकार के निर्देश के अनुसार यदि इन कृषि उपजों के व्यापारियों द्वारा इन जिंसों के रखरखाव आदि के लिए कोई सुविधा मंडी से प्राप्त की जाती है, तो इस सुविधा के लिए मंडी समिति उन से शासन द्वारा निर्धारित यूजर चार्ज वसूल कर सकेगी.

यदि कोई व्यापारी इन 46 जिंसों को मंडी परिसर में लाए बिना कोई व्यापार करता है, तो उन पर किसी भी प्रकार का शुल्क मंडी समितियों द्वारा आरोपित नहीं किया जा सकेगा.

–जितेंद्र प्रताप सिंह ■

योजना

बांस से मिलेगा मुनाफा

भोपाल : मध्य प्रदेश शासन की किसानों के लिए महत्त्वपूर्ण योजना आई है. वन विभाग को किसानों से संपर्क कर खेतों में बांस पौधारोपण करने की जिम्मेदारी दी गई है. बांस पौधारोपण योजना आम किसानों के लिए रहेगी. कोई भी किसान अपने खेत में लगा कर अतिरिक्त आमदनी ले सकता है. किसान वन परिक्षेत्र अधिकारी कार्यालय में जा कर पंजीयन करवा योजना का लाभ ले सकते हैं.

राष्ट्रीय बांस नीति के तहत उन्नत नस्ल के बांस की पैदावार कर किसानों की आमदनी को बढ़ाना है. किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए इस योजना के अंतर्गत 3 साल में 50 फीसदी राशि विभाग देगा. प्रथम वर्ष में 60 रुपए प्रति पौधा, द्वितीय वर्ष में 36 रुपए, तृतीय वर्ष में 24 रुपए. इस तरह 3 वर्ष में 120 रुपए किसानों को दिए जाएंगे.

शासन ने द्वितीय वर्ष के अनुदान का विवरण 80 फीसदी बांस पौधों की जीवित रहने व तृतीय वर्ष का अनुदान 100 प्रतिशत पौधों के जीवित रहने पर दिया जाएगा. एक हेक्टेयर भूमि पर बांस पौधा रोपण के लिए एक लाख रुपए की राशि प्राक्कलित की गई है. इस में किसान को प्रति हेक्टेयर 375 से 450 पौधे रोपण किए जाने का प्रावधान किया गया है.

बांस सब से ज्यादा नर्मदा नदी के किनारे ही होता है. यहां बांस प्राकृतिक रूप से वनों में अधिक मात्रा में उगाया जाता है. आज बांस की उपयोगिता हमारे दैनिक जीवन में अधिक हो गई है. ■

अपनी राय भेजें

फार्म एन फूड के बारे में आप की राय का स्वागत है. आप अपने विचारों के साथ किसी भी तरह की जानकारी, खेती और उस के कारोबार, उपज, खोज, सुविधा, मशीन, बाजार आदि से जुड़े लेख, सुझाव, फोटोग्राफ हमें मोबाइल नंबर 8447177778 पर व्हाट्सएप करें या ईमेल farmnfood@delhipress.in पर भेजें.

चुनिंदा सामग्री को प्रकाशित किया जा सकता है.

जानकारी

खेती में अपनाएं नए तरीके

रांची : लगातार हो रही बारिश और आगे के दिनों के मौसम के पूर्वानुमान को देखते हुए बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) के कृषि मौसम एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग ने सफल खेती के लिए ग्रामीण कृषि मौसम परामर्श जारी किया है.

बारिश और तेज हवा से किसानों को घबराने की जरूरत नहीं है. फसल तकनीक के इस्तेमाल से किसान अभी अच्छी कमाई कर सकते हैं. इस समय खेतों की मिट्टी में पर्याप्त नमी मौजूद है. किसान खाली पड़े खेतों की जुताई कर दें. जो किसान अदरक, हलदी या ओल की खेती करना चाहते हैं, वे खेत की तैयार कर बोआई (बीज/कंद लगाना) प्रारंभ करें.

बीज को बोने से पहले फफूंदनाशी दवा बाविस्टिन से उपचारित जरूर करें. इस के लिए 2 ग्राम बाविस्टिन दवा को एक लिटर पानी में अच्छी तरह मिला कर बीज को कम से कम एक घंटे तक डुबो कर छोड़ दें. फिर बीज को बोआई में उपयोग में लाएं. बीज बोने के बाद खेत को पुआल या पत्तियों से ढक दें. इस से खेत में नमी बची रहेगी और खरपतवार भी नियंत्रित होंगे.

खरीफ मौसम में रोपा धान के खेत की उर्वराशक्ति बढ़ाने के लिए हरी खाद वाली फसल जैसे सनई आदि की बोआई 20-25 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज की दर से करें.

बाली निकलने की अवस्था वाली फसलों में कीटाणुओं से बचाव के लिए कीटनाशी दवा क्लोरोपाइरीफास धूल या क्विनालफास धूल या मिथाइल पैराथियान धूल का भुरकाव 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से शाम के समय मौसम साफ रहने पर करें. खेत में लगी फसलों का निकाईगुड़ाई अवश्य करें. इस से मिट्टी में नमी ज्यादा दिनों तक बनाए रखने में मदद मिलेगी. ■

योजना

इस केंद्र में केवल बछिया ही होंगी

पश्चिमी चंपारण : देशी के नस्ल की उन्नत गायों के प्रति पशुपालकों का रुझान बढ़े. इस के लिए केंद्र सरकार की गोसंवर्धन योजना के तहत जिले में काम शुरू हुआ है.

इस के लिए माधोपुर कृषि विज्ञान केंद्र को चुना गया है. यहां पशु चिकित्सा विज्ञान विभाग ने ऐसी परियोजना की शुरुआत की है, जिस में यहां की देशी नस्ल की गाएं केवल बछिया देंगी. इन्हें पशुपालकों को निर्धारित मूल्य पर दिया जाएगा.

यहां 100 से 150 साहीवाल, रैड सिंधी और गिर प्रजाति की गायों को रखा जाएगा. गिर प्रजाति की गाय

गुजरात, साहीवाल हरियाणा व पंजाब और रैड सिंधी गाएं नैशनल डेरी रिसर्च इंस्टीट्यूट, करनाल से मंगाई जाएंगी.

कृषि विज्ञान केंद्र के कार्यक्रम समन्वयक सह पशु विज्ञान के विशेषज्ञ डा. एसके गंगवार ने बताया कि इनविट्रो तकनीक से प्रयोगशाला में ही सांड़ के शुक्राणु व गाय के अंडाणु को क्रौस कराया जाएगा. इस के बाद बने एंब्रियो की लिंग जांच होगी. जांच में यदि मादा एंब्रियो पाया जाता है, तो गाय की बच्चेदानी में प्रत्यारोपित कर दिया जाएगा. इस प्रकार गाय केवल बछिया देगी. इस योजना में 2 पशु चिकित्सक, 3 तकनीकी सहायक सहित 50 कर्मियों की टीम रहेगी.

पहले चरण में देशी नस्ल की गाएं 15 से 20 लिटर प्रतिदिन दूध देंगी. वे 30 से 40 लिटर दूध दें, इस पर काम होगा. इस में 2 साल लगेंगे. ■

तकनीक

कपास बेचने के लिए मोबाइल रखें औन

जींद : सीसीआई को सरकारी खरीद पर फसल बेचने के लिए मार्केट कमेटी में पंजीकरण करने वाले किसान अपना मोबाइल औन रखें, क्योंकि उन के पास मार्केट कमेटी का फोन, मैसज आएगा. जिन किसानों को फोन, मैसेज किए गए, उन में से काफी किसानों के मोबाइल बंद मिले. इस के चलते शैड्यूल के अनुसार जिन किसानों को कपास बेचने आना था, कम पहुंचे या देर से पहुंचे.

120 किसानों का शैड्यूल बनाया : सीसीआई की सरकारी खरीद को ले कर किसानों की संख्या को बढ़ाते हुए शैड्यूल बनाया जाएगा. अब हर रोज 45 किसानों से बढ़ा कर 120 किसानों का शैड्यूल बनेगा.

शैड्यूल में 60 किसानों को किया जाएगा शामिल : अब हर रोज सुबह 8 बजे से 12 बजे तक के शैड्यूल में 60, दोपहर 12 बजे से शाम 5 बजे तक के शैड्यूल में 60 किसानों को शामिल किया जाएगा.

एक किसान एक दिन में 40 क्विंटल तक कपास बेच सकता है. सरकारी रेट प्राइवेट खरीद से अधिक मिलने के चलते किसान कपास को सरकारी खरीद पर बेचने आ रहे हैं. भाव कम होने से जिन किसानों ने अपनी फसल को नहीं बेचा, उन किसानों को अब सरकारी खरीद पर बेचने से फायदा होगा. सरकारी कपास की खरीद किसानों के लिए इस बार फायदेमंद साबित हुई. ■

सलाह

धान की फसल के लिए हरी खाद फायदेमंद

बेलीपार : मई की शुरुआत में बारिश किसानों के लिए वरदान साबित हो सकती है. यह बातें कृषि विज्ञान केंद्र, बेलीपार के अध्यक्ष और वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एसके तोमर ने कहीं.

उन्होंने बताया कि किसानों को खेत में हरी खाद तैयार करने के लिए ढांचे की बोआई 50 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से कर देनी चाहिए. ढांचे की फसल 45 दिनों में तैयार हो जाती है. तैयार फसल को खेत में पलट कर पानी चला कर धान की रोपाई कर दें.

किसान लैवलर से अपने खेत को समतल कर लें, जिस से 40 फीसदी कम पानी में सिंचाई हो सकती है और आने वाले 4-5 सालों तक सिंचाई में लागत कम हो सकती है.

यदि किसान अपने खेत में फसल के अवशेष को यूरिया की 20 किलोग्राम मात्रा टौपड्रैस कर मिट्टी को पलट दें, तो धान की फसल बोने तक अवशेष सड़ कर खाद बन जाएंगे, साथ ही जमीन में कार्बन की मात्रा भी बढ़ जाती है, जिस से पैदावार अच्छी हो सकती है. ■

जानकारी

फोन करें सब्जियां मंगाएं

लखनऊ : अब सिर्फ एक फोन पर खेत से आप के घर पर मिलेगी ताजा सब्जी, वह भी वाजिब दाम पर. जिला प्रशासन और कृषि विभाग ने मिल कर यह योजना शुरू

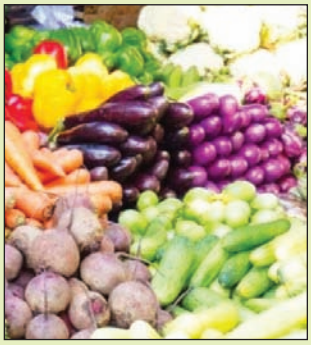

की है. इस के लिए राजधानी लखनऊ के कई किसान उत्पादक संगठन (एसपीओ) को इस योजना के साथ जोड़ा गया है.

जिला कृषि अधिकारी ओपी मिश्रा बताते हैं कि एसपीओ सीधे किसानों के खेत से सब्जी व फल खरीदते हैं, साथ ही किसानों को अधिक दाम देते हैं, जिस से उन का मुनाफा कुछ अधिक हो जाता है. इस के बाद एसपीओ खेतों से सब्जी उठा कर शहरी उपभोक्ताओं के घरों में सप्लाई करेंगे.

इस योजना से किसानों और उपभोक्ताओं दोनों का फायदा होगा. किसानों को खेत में ही बैठे मंडी से अच्छा दाम मिल जाएगा और शहरी जनता को घर बैठे वाजिब दाम पर खेत से आई ताजा सब्जियां.

इंदु किसान साथी प्रोड्यूसर कंपनी एसपीओ के सीईओ प्रभु शर्मा का दावा है कि उपभोक्ताओं को सब्जियां बाजार से कम दाम पर मिलेगीं, अभी वाहन कम हैं, इसलिए अगर एक क्षेत्र से अधिक डिमांड आई तो हम 2 से 3 घंटे के भीतर उपभोक्ताओं के घर सब्जियां पहुंचा देंगे. ये नंबर हैं, जिन पर आप मोबाइन नंबर 9140442985, 9451908497 पर बात कर सकते हैं. ■

भानु प्रकाश राणा, अक्षय कुलश्रेष्ठ

इस बार इस कौलम के तहत कृषि और पशुपालन से जुड़े लोगों के लिए खास जानकारी दी जा रही है. यह जानकारी अलगअलग क्षेत्र के कृषि विशेषज्ञों द्वारा दी गई है, जिस का लाभ निश्चित तौर पर सभी किसानों को मिलेगा.

खीस की उपयोगिता

यह किसी भी नवजात पशु का प्रथम आहार होता है.

☛ यह नवजात को विभिन्न बीमारियों से बचाता है, क्योंकि इस में एंटीबौडी पाए जाते हैं.

☛ यह पोषक तत्त्वों से भरपूर होता है. इस में प्रोटीन, ऊर्जा, विटामिन व खनिजलवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं.

☛ इस को पीने से नवजात का पहला मल शीघ्र ही आसानी से निकल जाता है.

☛ जन्म के कुछ ही समय यानी संभव हो तो तकरीबन 2 घंटे के भीतर यह नवजात को पिला देना चाहिए.

☛ इस को पिलाने में उचित मात्रा का ध्यान रखना चाहिए. यह एक दिन में नवजात के शारीरिक

भार का 10 फीसदी होना चाहिए. सर्दियों में इसे कुनकुना कर के पिलाना चाहिए.

☛ नवजात की मां का खीस उपलब्ध न होने की अवस्था में अन्य मां का भी दिया जा सकता है.

☛ इसे जल्दी पिलाने से गाय की जेर भी आसानी से गिर जाती है.

-डा. अजयवीर सिंह सिरोही, प्रधान वैज्ञानिक, केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, मेरठ

गोवंश के लिए उपयुक्त फर्श की व्यवस्था

गोवंशपालन में सभी वर्गों के पशुओं को बाड़े/आवास में समुचित फर्श की उपलब्धता उन के उत्पादन को प्रभावित करती है, इसलिए पशुपालकों को निम्न बिंदुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है :

☛ सभी पशुओं को रहने, उठनेबैठने, घुमाने के लिए आवास में पूरी जगह मिलनी चाहिए.

☛ आवास में पक्के फर्श के साथसाथ कच्चे फर्श की भी व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि पशु आराम से बैठ कर जुगाली कर सके.

☛ आवास के दोनों फर्श पर छत अथवा पेड़ों की छांव पशुओं के लिए होनी चाहिए.

☛ फर्श समतल होना चाहिए. ऊबड़खाबड़ फर्श में पानी या मलमूत्र इकट्ठा हो कर संक्रमण पैदा होते हैं और यही पशुओं में भयानक बीमारियों जैसे कि थनेला आदि के लिए जिम्मेदार होते हैं.

☛ छत वाले फर्श में 1:40 व खुले में 1:60 का ढलान होना चाहिए, ताकि आसानी से फर्श की सफाई हो सके.

☛ प्रतिदिन फर्श की सफाई बहुत जरूरी है. यह धुलाई के बाद सूख भी जाना चाहिए. शैड के अंदर धूप का आना इस के लिए अच्छा माना जाता है.

☛ शैड के भीतर हफ्ते में कम से कम एक बार डिटर्जैंट जैसे कि सोडियम कार्बोनेट (4 फीसदी) या सोडियम हाइपोक्लोराइड (1 फीसदी) से धुलाई अवश्य करनी चाहिए.

-डा. अजयवीर सिंह सिरोही, प्रधान वैज्ञानिक, केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, मेरठ

अफरा या पेट फूलना

जुगाली करने वाले पशु का बहुतायत में चारा (विशेषकर हरा चारा) खा लेने के परिणामस्वरूप पेट फूल जाता है और कष्ट का कारण होता है.

कारण : ● अधिक कार्बोहाइड्रेट वाले पदार्थों का सेवन. ● हरा चारा, जो ओस अथवा वर्षा से भीगा रखता है, के खाने से. ● गीला, दलहनी या रसदार चारा (बरसीम/लूसर्न आदि) खाने से.

लक्षण : ● पशु का जुगाली (पागुर) बंद. ● पिछले पैर पटकना और पेट पर मारना. ● बाईं तरफ का पेट फूला हुआ. ● मुंह खुला और नाक फैली हुई. ● सांस लेने में तकलीफ. ● फूले हुए पेट को थपथपाने पर ढोल जैसी आवाज. ● पेशाब, पाखाना जल्दीजल्दी अथवा बंद.

उपचार : ● टिंपोल आईएस 100 मिलीलिटर कुनकुने पानी में मिला कर पिलाएं अथवा ब्लोटोनौक्स या ब्लोटासिल 100 मिलीलिटर कुनकुने पानी में मिला कर पिलाएं. ● टेंपनाइटिस से आराम होने पर हिमालय बत्तीसा 20 ग्राम 4-5 दिन तक खिलाएं. अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें.

- डा. सुमित महाजन (वैज्ञानिक), केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, ग्रासफार्म रोड, मेरठ कैंट

पशुओं की देखभाल में इन बातों का रखें ध्यान

खेतीबारी या पशु के साथ काम करने के बाद अपने हाथमुंह को साबुन से अच्छी तरह धोएं, मास्क का प्रयोग करें और सोशल डिस्टैंसिंग का पालन अवश्य ही करें.

आजकल गरमी धीरेधीरे बढ़ रही है. ऐसी दशा में पशुओं को गरमी से बचाने के लिए निम्न प्रबंध करें :

☛ पशुओं के लिए पर्याप्त मात्रा में ताजा पानी छायादार जगह पर ही दिया जाए.

☛ ठंडी और छायादार जगह पेड़ के नीचे या कम से कम 9 फुट ऊंची छप्पर की छत बनाएं.

☛ बंद पशुगृह में हवा के आवागमन बढ़ाएं, जहां बिजली की आपूर्ति हो, वहां पंखों का प्रयोग करें.

☛ गरम हवा और लू को रोकने के प्रबंध करें.

☛ गीली जूट की बोरी या छप्पर वाली दीवार का प्रयोग करें.

☛ पशुओं को सुबह, शाम और रात में चारा दें.

☛ पशुओं की चराई सुबह जल्दी और शाम के समय ही करें.

☛ पशुओं के आहार में बदलाव करें, ताकि कम शुष्क पदार्थ का प्रयोग करने पर भी पोषक तत्त्वों की मात्रा समान ही रहे. पोटाश से भरपूर खनिज मिश्रण, नमक, मिनरल मिक्सचर और पानी को प्राथमिकता दें.

अधिक जानकारी के लिए वरिष्ठ वैज्ञानिकों और अध्यक्ष से संपर्क करें.

- डा. नागेंद्र कुमार त्रिपाठी ■

दिक्कत आप की दवा *फार्म एन फूड* की

खेतीकिसानी से जुड़ी अपनी समस्याएं हमें लिख कर भेजें. आप की समस्याओं का समाधान एक्सपर्ट करेंगे. समस्या के साथ अपना नाम व पता जरूर लिखें. आप हमें SMS भी कर सकते हैं.

सवाल जवाब विभाग, फार्म एन फूड
ई-8, झंडेवालान एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55
ई-मेल: farmnfood@delhipress.in
SMS के लिए नंबर : 08447177778

गरमी में

अंडा देने वाली मुरगियों का प्रबंधन

✻ डा. नागेंद्र कुमार त्रिपाठी
✻ डा. संतोष कुमार विश्वकर्मा

पशुपालन एवं कृषि संबंधित सारे काम कोरोना वायरस से बचाव के उपायों को ध्यान में रखते हुए जैसे मास्क लगाना, एकदूसरे से कम से कम एक मीटर दूरी बनाए रखना, हाथों को बारबार साबुन से साफ करना आदि उपायों को ध्यान में रख कर ही करें.

हमारे यहां अंडा उत्पादन के लिए आवश्यक उचित तापक्रम 20 डिगरी सैंटीग्रेड से 25 डिगरी सैंटीग्रेड होता है, जबकि मुरगियों का तापक्रम 37 डिगरी सैंटीग्रेड से 39 डिगरी सैंटीग्रेड होता है. इस कारण गरम मौसम में लेयर मुरगियों पर काफी प्रभाव पड़ता है.

गरमी का प्रभाव

- अंडे का उत्पादन गिर जाता है.
- अंडे का आकार छोटा हो जाता है.
- लेयर मुरगी में बढ़वार कम होती है.
- आहार ग्रहण करने की क्षमता कम होती है.
- मुरगियों के अंदर बीमारियों से लड़ने की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है.
- अधिक गरमी से मुरगियों की मौत हो जाती है.
- अंडे का छिलका पतला हो जाता है.
- जल ग्रहण करने की क्षमता बढ़ जाती है.

गरमी में प्रबंधन

- आवास की छत पर छप्पर रख देना चाहिए.
- आवास की छत दोनों तरफ से कम से कम 3 फुट बाहर निकली होनी चाहिए.
- छत पर पानी का छिड़काव करते रहें, जिस से अंदर का तापमान 3 डिगरी से 4 डिगरी सैंटीग्रेड तक कम हो जाता है.
- आवास के बीच में पेड़ लगाना लाभदायक है.
- आवास की छत पर हरी लताएं चढ़ा देनी चाहिए.
- खिड़कियों पर बोरी लगा देनी चाहिए और दिन में उस पर पानी का छिड़काव करते रहना चाहिए, जिस से कमरे का तापमान कम हो सके.
- आवास के अंदर पंखा लगाना जरूरी है. हो सके तो कूलर का इस्तेमाल करें और एग्जास्ट फैन का भी इस्तेमाल करते रहना चाहिए. इस से कमरे के अंदर की गरम हवा बाहर निकल सके.

इन बातों पर मुरगीपालक ध्यान देंगे, तो गरमियों में मुरगियों को मारने से बचाया जा सकता है. ■

बढ़ते तापमान में मुरगीपालक बरतें सावधानी

बदलते मौसम में जैसेजैसे तापमान बढ़ेगा, मांस व अंडा उत्पादन के प्रभावित होने की संभावना है. वर्तमान समय में मांस और अंडे का उत्पादन प्रभावित न हो सके, इसलिए मुरगीपालकों को मुरगी फार्म में निम्नलिखित उपायों को अपनाना चाहिए :

- मुरगी फार्म में बायोसिक्योरिटी की व्यवस्था करें और फार्म के आसपास चूने का बुरकाव करें.
- यदि शेड में बिछावन पुराना या पपड़ीयुक्त हो, तो उसे तुरंत बदल दें.
- गरमी से बचाव के लिए मुरगी बाड़े में बोरे के परदे लगाएं और आवश्यकता पड़ने पर पानी का छिड़काव भी करते रहें.
- मुरगियों को फफूंदीरहित राशन ही खाने को दें.
- गरमी बढ़ने पर मुरगियों के आहार में प्रोटीन की मात्रा बढ़ा दें. यदि गरमी ज्यादा बढ़ती है तो मुरगियों को विटामिन ए, विटामिन बी कौंप्लैक्स और एंटीबायोटिक दवाओं को स्वच्छ व ताजा पानी में मिला कर दें और बरतनों की संख्या भी बढ़ा दें.
- दाना व पानी के बरतनों को सदैव कीटाणुनाशक से धो कर और धूप में सुखा कर ही प्रयोग करें.
- कम अंडे देने वाली मुरगियों की छंटनी (कलिंग) करें. मुरगियों के पेट में पड़े कीड़ों की रोकथाम के लिए दवा दें.

अधिक जानकारी के लिए वरिष्ठ वैज्ञानिक व अध्यक्ष से संपर्क करें और सरकार द्वारा दिए गए लौकडाउन के दिशानिर्देशों का पालन करते हुए अपने कृषि व पशुपालन का काम करें. ■

लौकडाउन में जी उठी यमुना

* नसीम अंसारी कोचर

करोड़ों रुपए खर्च कर के जो काम न हो पाया, वह काम महज चंद दिन के लौकडाउन ने कर दिया. दिल्ली में यमुना जी उठी है. यमुना फिर से सांसें ले रही है. फिर से नीली दिख रही है. इस में मछलियां अठखेलियां करती नजर आ रही हैं.

यमुना को साफ करने के लिए केंद्र और दिल्ली सरकार ने बड़ी मशक्कतें कीं, इस की सफाई के लिए करोड़ों का बजट फूंक दिया, मगर कोई सकारात्मक परिणाम कभी नहीं निकला. लेकिन लौकडाउन में यमुना ने खुद अपने को साफ कर लिया.

लौकडाउन में न तो यमुना में औद्योगिक कचरा गिरा, न लोग अपना मैल धोने यहां आए और न पूजापाठ हुई. शवदाह, अस्थि या मूर्ति विसर्जन जैसे काम भी इस के घाटों पर नहीं हुए.

नतीजा, यमुना खुश हो कर अपने अति पुराने सुंदर नीले रूप में निखर आई. यमुना के इस बदलाव को विशेषज्ञों के स्तर पर काफी गंभीरता से लिया जा रहा है. लौकडाउन ने यमुना ही नहीं, देश की बाकी नदियों को भी जीवनदान दिया है. गंगा, गोमती, ब्रह्मपुत्र जैसी तमाम नदियों का पानी अपना रंग बदल कर स्वच्छ नीला नजर आने लगा है. इन में जलीय जीवों की तादाद बढ़ती दिख रही है.

गौरतलब है कि दिल्ली में यमुना को साफ करने के लिए सरकारी योजनाएं साल 1975 से बनबिगड़ रही थीं. इन योजनाओं का आज तक कोई परिणाम नहीं निकला. इन योजनाओं पर करोड़ोंअरबों रुपए स्वाहा हो चुके हैं.

साल 2011 के मई महीने में एक याचिका पर सुनवाई करते हुए सर्वोच्च न्यायलय ने दिल्ली सरकार से यमुना उद्धार की रिपोर्ट भी मांगी थी, मगर तत्कालीन सरकार कोई उत्साहवर्धक रिपोर्ट पेश नहीं कर पाई.

सरकार द्वारा दिल्ली के 22 किलोमीटर हिस्से की यमुना नदी की सफाई के लिए पिछले दशक में 2,000 करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च हो चुके हैं, परंतु यमुना जस की तस गंदी बनी रही. सारा पैसा नेताओं और सरकारी अधिकरियों की जेबों में चला गया. गंदगी, गाद और औक्सीजन की भयंकर कमी ने यमुना की मछलियों का जीवन भी दुश्वार कर दिया. बीते कई सालों से यमुना में मछलियों का टोटा पड़ गया था.

यमुना को शुद्ध करने के लिए बाकायदा 'यमुना बचाओ आंदोलन' चला. इस आंदोलन में भारतीय किसान संघ ने अहम भूमिका निभाई. प्रयाग से दिल्ली तक यमुनाभक्तों ने पदयात्राएं कीं, जंतरमंतर पर हजारों लोगों ने एकत्रित हो कर अपना मत सरकार के सामने रखा.

उधर बृज की गलीगली में घूम कर आंदोलनकारियों ने यमुना को बचाने के लिए भजनकीर्तन के जरीए चेतना जागृत करने की कोशिश की कि लोग किसी तरह नदियों में अपने घर का कूड़ाकचरा, पूजा सामग्री इत्यादि डालने से तोबा कर लें, लेकिन सारा प्रयास नाकाम रहा. न लोग सुधरे और न सरकार का कोई जतन काम आया.

यमुना बचाओ आंदोलन

लंबे समय तक जुड़े रहे सोशल ऐक्टिविस्ट एनएन मिश्रा कहते हैं, ''यमुना में घरेलू कूड़ाकरकट से इतना प्रदूषण नहीं होता, जितना इस के घाटों पर पूजापाठ करने वाले, फूल और पूजा सामग्री डालने वाले, प्लास्टिक की थैलियों में गंद फेंकने वाले, मरे हुए जानवरों और इनसानों के शवों को यमुना में बहाने वाले, रोजाना इस के घाटों पर अपने गंदे कपड़े धोने वाले लोग यमुना को गंदा करते हैं और इस से भी ज्यादा प्रदूषण औद्योगिक मिलों द्वारा पैदा किया जाता है, जो रोजाना लाखों लिटर औद्योगिक कचरा इस में उड़ेलती हैं.

''इसी के साथ स्लौटर हाउसों से निकला रक्त, रसायन, गंदगी सब यमुना में गिरती है, लेकिन लौकडाउन ने इन सब पर रोक लगा रखी है, लिहाजा यमुना साफ हो गई है.

''लौकडाउन ने दिल्ली की यमुना को नया जीवन दे दिया है. साल 1990 के बाद यमुना अब इस रूप में दिख रही है. दूसरी तरफ यमुना किनारे बसी झुग्गियों में रहने वाले लोग अपने घर चले गए हैं. इस वजह से वहां की गंदगी भी यमुना में कम जा रही है. फैक्टरियों का गंदा और रंगीन पानी यमुना में नहीं गिर रहा है. यमुना की स्वच्छता का एक बड़ा कारण यही है.''

उल्लेखनीय है कि यमुना की नई रंगत देख कर यमुना निगरानी समिति की ओर से केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड सीपीसीबी यानी को इस पर अध्ययन कर एक रिपोर्ट तैयार करने को कहा गया है, ताकि यह बदलाव भविष्य में भी

यमुना में सुधार का आधार बन सके. यमुना से जुड़ी योजनाएं भी रिपोर्ट को आधार बना कर तैयार की जाएंगी.

इसी निर्देश के मद्देनजर सीपीसीबी की एक टीम ने विभिन्न स्थानों से राजधानी में यमुना के पानी के नमूने भी लिए हैं. संभावना जताई जा रही है कि यमुना के इस बदलाव पर प्राथमिक रिपोर्ट जल्दी जारी कर दी जाएगी.

गौरतलब है कि दिल्ली में पल्ला से बदरपुर तक कुल 54 किलोमीटर तक यमुना बहती है, लेकिन वजीराबाद से ओखला के बीच तकरीबन 22 किलोमीटर के क्षेत्र में यह सब से ज्यादा प्रदूषित है.

यमुनोत्री से प्रयाग (इलाहाबाद) के बीच 1,370 किलोमीटर लंबी यमुना का यह हिस्सा कहने को तो थोड़ा सा है, लेकिन 76 फीसदी प्रदूषण इसी हिस्से में दिखता है. वजह, पानीपत और दिल्ली की औद्योगिक इकाइयों का कचरा और रसायनयुक्त पानी नालों के जरीए सीधे यमुना में गिरता है.

दिल्ली सरकार के उद्योग विभाग ने पिछले कुछ समय में सीधे नालों में गंदगी फैलाने को ले कर 900 से अधिक औद्योगिक इकाइयों पर कार्यवाही भी की थी. प्रदूषण नियंत्रण उपायों में दिल्ली के 28 औद्योगिक क्लस्टरों में से 17 को 13 कौमन एफ्लुएंट ट्रीटमैंट प्लांट (सीईटीपी) से जोड़ा गया है, जबकि 11 इस से जुड़े हुए नहीं हैं.

इधर यमुना के पानी का शोधन भी कम हो रहा था. उल्लेखनीय है कि यमुना में 748 एमजीडी पानी गिरता है, इस में से मात्र 90 एमजीडी पानी का शोधन ही हो पा रहा है और 290 एमजीडी पानी यमुना में ऐसे ही गिर रहा है.

देशव्यापी लौकडाउन ने दिल्ली और हरियाणा की तमाम औद्योगिक इकाइयों पर तालाबंदी कर दी. नतीजा, यमुना में औद्योगिक कचरा और रसायनयुक्त पानी बिलकुल नहीं जा रहा है. अधिकतर स्लौटर हाउस बंद पड़े हैं. घाटों पर लोगों का आना बंद है. कोई पूजापाठ, हवन इत्यादि भी नहीं हो रहा है.

इस दौरान बारिश भी कई बार हो चुकी है. दूसरी तरफ हरियाणा ने हाल ही में सिंचाई का भी काफी सारा पानी यमुना में छोड़ा है. इन्हीं सब के मिश्रित परिणाम से यमुना का बहाव बढ़ा है. पहले का कचरा नीचे बैठ गया है और ऊपर बह रहा पानी पहले की तुलना में काफी साफ नजर आ रहा है.

इस के अलावा दिल्ली में हिंडन का पानी भी पहले से साफ हुआ है. हालांकि घरेलू सीवरेज की गंदगी अभी भी नदी में जा रही है. इस के बावजूद औद्योगिक कचरा गिरना एकदम बंद हो गया है, इसीलिए पानी की गुणवत्ता में सुधार हुआ है.

उन्होंने कहा कि लौकडाउन के चलते आने वाले कुछ दिनों में नदियों के जल में और सुधार की पूरी उम्मीद है. सोचिए कि जिस यमुना को साफ करने के लिए सरकारों ने करोड़ों रुपए खर्च कर दिए, उसे लौकडाउन ने एकदम पाकसाफ कर दिया.

अगर कोरोना का प्रकोप नहीं होता तो आप अपने बच्चों को यह यकीन नहीं दिला पाते कि यमुना का पानी नीला होता है.

गंगा ने भी बदला रूप

नदियों की सफाई पर नजर रखने वाले पर्यावरणविद विक्रांत टोंगड़ का मानना है कि देश में लौकडाउन के बाद से गंगा नदी के पानी की गुणवत्ता में भी काफी सुधार हुआ है.

विक्रांत टोंगड़ कहते हैं कि औद्योगिक क्षेत्र बंद हैं, जहां से बड़े पैमाने पर कचरा नदीं में

डाला जाता था. टेनरी यानी चमड़ा उद्योग पूरी तरह से बंद है. यही वजह है कि कानपुर के आसपास गंगा का पानी बेहद साफ हो गया है.

और्गेनिक प्रदूषण तो नदी के पानी में घुल कर खत्म हो जाता है, लेकिन औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला रासायनिक कचरा घातक किस्म का प्रदूषण है, जो नदी की खुद को साफ रखने की क्षमता को खत्म कर देता है.

लौकडाउन के दौरान नदी की खुद को साफ रखने की क्षमता में सुधार के कारण ही जल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है. ■

ग्रीन/पौलीहाउस में नर्सरी आय व जुड़ाव का जरीया

✻ जितेंद्र द्विवेदी

बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले के नौतन प्रखंड में ग्राम पंचायत जगदीशपुर का एक टोला डेगौना है, जहां 50 प्रतिशत से अधिक किसान सब्जियों की खेती करते हैं. अनुसूचित जाति बहुल इस गांव को बाढ़ तो कभीकभार ही प्रभावित करती है, परंतु मौसम की मार किसानों पर समयसमय पर पड़ती ही रहती है.

असमय वर्षा, अधिक वर्षा, जाड़ा अथवा अधिक गरमी के कारण विशेषकर छोटे, मझोले किसान समय पर सब्जियों की खेती नहीं कर पाते, क्योंकि उन्हें समय पर नर्सरी की उपलब्धता नहीं हो पाती है. जब गोभी, टमाटर, बैगन, मिर्च आदि के बीजों से नर्सरी तैयार करने का समय होता है, उस समय बरसात का समय होने के कारण उन की जमीन में नमी अधिक होती है, जिस से वे बीज नहीं डाल पाते और समय पर नर्सरी तैयार नहीं होती. नतीजतन उन को दाम भी कम मिलता है.

यहां पर सब्जी की खेती करने वाले किसानों के समक्ष आने वाली समस्याओं को बिंदुवार देख सकते हैं :

☛ प्रतिकूल मौसमों के चलते नर्सरी तैयार करने में बाधा आती है.

☛ नर्सरी के लिए बाजार पर निर्भरता होने के कारण गुणवत्तापूर्ण पौधों की उपलब्धता नहीं हो पाती.

☛ समय पर नर्सरी के पौधों के न मिलने से उपज और दाम दोनों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है.

इन समस्याओं से निबटने के लिए गोरखपुर एन्वायरमेंटल एक्शन ग्रुप ने विज्ञान एवं तकनीकी डीएसटी कोर सपोर्ट परियोजना के तहत चयनित किसान छठिया देवी पत्नी सुरेश भगत की जमीन पर एक ग्रीन हाउस बनाने में अपना तकनीकी योगदान दिया. 30 फुट लंबाई व 20 फुट चौड़ाई वाले इस ग्रीनहाउस ने छठिया देवी के खेती की दिशा ही बदल दी.

अब छठिया देवी व्यावसायिक स्तर पर समय से पूर्व ही नर्सरी तैयार कर उसे स्वयं भी रोप लेती हैं और दूसरे किसानों को भी दे रही हैं. फलस्वरूप उन की खेती समय से हो रही है और बाजार में समय से जाने पर अच्छा दाम मिल रहा है, तो वहीं दूसरी तरफ अन्य किसानों को नर्सरी के पौधों की बिक्री करने से आय भी प्राप्त हो रही है.

यह पौलीहाउस पौलीथिन और जाली से बनने के कारण इस का उपयोग मौसम के अनुसार किया जा सकता है अर्थात तेज धूप के समय पौलीथिन को हटा कर सिर्फ जाली से ही पौलीहाउस को ढक सकते हैं.

पौलीहाउस में नर्सरी तैयार करने की तकनीक

☛ पौलीहाउस में बेड विधि से नर्सरी तैयार की गई.

☛ बेड भूमि सतह से 6 इंच ऊपर और 4 फुट चौड़ाई व 10 फुट लंबाई में तैयार किया गया.

☛ बेड की तैयारी में कंपोस्ट खाद, राख, नीम की खली और अंडे के चूर्ण का मिश्रण तैयार कर मिलाया गया.

☛ लाइन सोइंग विधि का उपयोग करते हुए बीज की बोआई की गई.

☛ पंक्ति से पंक्ति की दूरी 5 सैंटीमीटर रखी गई.

☛ बीज को आधा

ग्रीनहाउस में तैयार नर्सरी और उस से जुड़ाव का वितरण

ग्रीन/पौलीहाउस बनाए जाने से ले कर अब तक तैयार नर्सरी और उस से संबंधित अन्य विवरण निम्न तालिका में दिए जा रहे हैं :

नर्सरी तैयार करने हेतु डाला गया बीज	प्रजाति	बीज की मात्रा	बीज डालने की तिथि	नर्सरी तैयार होने की तिथि	बिक्री किसानों की संख्या
गोभी	गिरिजा	400 ग्राम	10.7.2019	15.8.2019	20 किसानों को
मिर्च	हाईब्रिड	100 ग्राम	20.8.2019	16.9.2019	15 किसानों को
टमाटर	अविनाश 2	50 ग्राम	20.8.2019	15.9.2019	20 किसानों को
बैगन	हाईब्रिड	50 ग्राम	20.8.2019	12.9.2019	10 किसानों को
गोभी	गिरिजा	400 ग्राम	26.10.2019	13.11.2019	17 किसानों को

नतीजा हैरान करने वाला

छठिया देवी का कहना है, ''जब पौलीहाउस बना, उस समय उस खेत में हम ने आलू और मक्का लगा रखा था. पौलीहाउस के अंदर भी कुछ खेत आ गया और हम ने उसे उसी तरह से छोड़ दिया. परिणाम आश्चर्यजनक रहा. हमें बाहर की अपेक्षा अधिक मात्रा में आलू और मक्के का उत्पादन मिला. पौलीहाउस के अंदर आलू व मक्का के फायदों को निम्न बिंदुओं के अंतर्गत देखा गया:

☛ हमें दवा का छिड़काव नहीं करना पड़ा.

☛ आलू में पाला नहीं लगा.

☛ मक्के में बाल चूसक कीट का प्रकोप नहीं हुआ.

☛ उपज ज्यादा मिली. अनुमानतः बाहर की तुलना में डेढ़ गुना उपज मिली.

आज आसपास के अहवर पंचायत, जमुनिया, नोनया पंचायत, जगदीशपुर के कुड़िया, बिरती टोले के लोग हमारी नर्सरी से सब्जियों के पौधे ले जा रहे हैं, जिस से एक तरफ तो हमारी आमदनी बढ़ी, वहीं दूसरी तरफ हमारी पहचान भी बढ़ी.''

सैंटीमीटर गहराई में बोआई की गई व बोआई के उपरांत अखबार बिछा कर ऊपर से सूखे खरपतवार से 36 घंटे तक ढक दिया गया.

☛ 1-2 हलकी सिंचाई हजारे से करें.

ग्रीन/पौलीहाउस का फायदा

ग्रीनहाउस में नर्सरी तैयार करने के फायदे को इस तरह देखा जा सकता है :

☛ बाहर डाली गई नर्सरी की तुलना में पौलीहाउस में नर्सरी जल्दी तैयार होती है. बाहर की अपेक्षा 10 दिन पहले नर्सरी तैयार हो जाती है.

☛ पौधों की बढ़वार बाहर की नर्सरी की अपेक्षा अधिक तीव्र गति से होती है.

☛ पौलीहाउस में उगाए गए पौधे रोगरोधी और स्वस्थ होते हैं.

☛ बाहर की अपेक्षा पौलीहाउस में खरपतवार कम उगते हैं.

☛ पौधों का बारिश से बचाव होता है.

☛ समय से सब्जियों की खेती हो पाती है.

सीमाएं

☛ इतने सारे फायदों के साथ एक बिंदु यह भी है पौलीहाउस में तैयार नर्सरी के पौधे अधिक तीव्र गति से बढ़ने के कारण पौधे पतले और लंबे हो जाते हैं.

☛ तैयार पौधों को पौलीहाउस में अधिक समय तक नहीं रोका जा सकता है. ■

मौसमी फलों का सेवन

वैश्विक महामारी कोरोना के दृष्टिगत कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा यह अपेक्षा की जाती है कि आप लोग अपने को स्वस्थ रखते हुए ही अपने कृषि कार्यों को पूरा करें और मौसमी फलों का सेवन करें. फलों के सेवन से शरीर रहेगा फिट, जानें किस फल से क्या लाभ होता है.

* डा. मु. सुहैल, डा. एसके विश्वकर्मा, डा. संजय सिंह

आम : इस में एंटीऔक्सीडेंट्स होता है. यह शरीर में बनने वाले फ्री रैडिकल्स को रोकता है, जिस से कोलोन, ब्रेस्ट, प्रोस्टेट आदि कैंसर से बचाव होता है. यह टारटरिक, मैलिक और साइट्रिक एसिड से भरपूर होता है. ये शरीर के क्षारीय तत्त्व को बनाए रखने में मदद करते हैं. इस में मौजूद ग्लूटामिन एसिड स्मरण शक्ति को बढ़ाता है.

संतरा : इस में पोटैशियम और मैगनीशियम अधिक मात्रा में पाई जाती है, जिस से ब्लडप्रेशर कंट्रोल रहता है. संतरा में फाइबर होता है, जो कोलेस्ट्रोल को नियंत्रित करने में सहायक है. इस में एंटीऔक्सीडेंट पाए जाते हैं, जो संक्रमण से बचा कर रखते हैं. संतरे में विटामिन सी की भरपूर मात्रा पाई जाती है.

पपीता : इस में पपेन एंजाइम व बीटा कैरोटीन नामक तत्त्व पाए जाते हैं, जो पाचन क्रिया को चुस्त व दुरुस्त बनाने में मदद करते हैं. इसे खाने से कैंसर से भी बचा जा सकता है, क्योंकि इस में बीटा कैरोटीन नामक तत्त्व पाया जाता है. पीलिया के रोगी को प्रतिदिन एक पका हुआ पपीता खाना चाहिए.

सेब : इसे खाने से विटामिन ई, विटामिन के, विटामिन सी, विटामिन ए, पोटैशियम, कैल्शियम, कैलोरी, मैगनीशियम, कार्बोहाइड्रेट, आयरन, मैगनीज, कौपर, जिंक, प्रोटीन और विटामिन बी1 तत्त्व हमारे शरीर को मिलते हैं.

एक वैज्ञानिक शोध के अनुसार, नियमित सेब खाने से हम कैंसर से बचे रहते हैं. इस के नियमित सेवन से कई जहरीले पदार्थ जैसे शीशा, पारा आदि शरीर से निकल जाते हैं. लाल सेब में क्वेरसेटिन नामक एंटीऔक्सीडेंट तत्त्व पाया जाता है, जो प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है.

केला : इस में कैरोटिनौइड यौगिक पाया जाता है, जिस से अंधेपन का खतरा दूर होता है. इस में भरपूर मात्रा में फाइबर मौजूद होते हैं, जो पाचन क्रिया को बेहतर बनाते हैं. इस में पोटैशियम पाया जाता है, जो खून को ठीक और दिमाग को चुस्त रखता है. केला हमारे नर्वस सिस्टम को मजबूत करता है.

अधिक जानकारी के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र से संपर्क करें. ■

जूट की उन्नत खेती से बढ़ाएं आमदनी

* बृहस्पति कुमार पांडेय

हमारे देश में खाद्यान्न भंडारण के लिए जूट के बोरों की बेहद कमी के चलते हर साल हजारों टन अनाज बुरी तरह से बरबाद हो जाता है, जबकि आज भी भारत दुनिया के सब से बड़े जूट उत्पादक देश के रूप में मशहूर है. लेकिन हाल के कुछ सालों में देश में जूट की खेती में भारी कमी देखने को मिल रही है, जबकि जूट और उस से बने उत्पादों की मांग में लगातार बढ़ोतरी हुई है.

जूट के रेशे से न केवल बोरे बनाए जाते हैं बल्कि इस से दरी, तंबू, तिरपाल, टाट, रस्सियां और निम्न कोटि के कपड़े तैयार किए जाते हैं. साथ ही, कागज, फैशनेबल चीजें, बैग, कंबल, पैकिंग से जुड़े उत्पाद जैसी सैकड़ों चीजों को बनाया जाता है.

भारत से आज भी कई देशों को जूट और उस से बनी तमाम चीजों का निर्यात किया जाता है. ऐसे में किसान अगर जूट की खेती उन्नत और बेहतर तरीके से करें, तो अपनी आमदनी में अच्छाखासा इजाफा कर सकता है. क्योंकि जूट को एक नकदी फसलों में गिना जाता है.

उन्नत किस्में

जूट की फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए उस की उन्नत प्रजातियों का चयन किया जाना जरूरी हो जाता है. जूट की 2 किस्में प्रचलित हैं, जिस में अलगअलग प्रजातियां बोए जाने के लिए उपयोग में लाई जाती हैं. जूट की पहली किस्म को कैपसुलेरिस के नाम से जाना जाता है. इसे सफेद जूट या ककिया बंबई जूट के नाम से भी जाना जाता है. इस की पत्तियां चखने पर स्वाद में कड़वी होती हैं. इस किस्म की प्रजातियों को अगेती फसल के रूप में बोया

जाता है. इस की जेआरसी-321 प्रजाति अधिक उत्पादन देने वाली मानी जाती है. इस प्रजाति की फसल जल्दी पक कर तैयार होती है. वहीं दूसरी प्रजाति जेआरसी-212 को देर से यानी मार्च से मई के महीने में बो कर कर के जुलाईअगस्त माह तक काटा जाता है.

जूट की जेआरसी-698 प्रजाति को उन्नत प्रजातियों में गिना जाता है. इसे मार्च महीने से ले कर मई महीने के दूसरे हफ्ते तक बोया जाता है. इस के अलावा कैपसुलेरिस की अंकित (एनडीसी) व एनडीसी 9102 किस्में भी उत्पादन के नजरिए से अच्छी मानी जाती हैं.

जूट की दूसरी किस्म ओलीटोरियस को पछेती फसल के रूप बोआई के लिए सब से उपयुक्त माना जाता है. इस की बोआई अप्रैल माह के अंत से ले कर जून माह के अंत तक की जाती है. इस की उन्नत किस्में जेआरओ-632, जेआरओ-878, जेआरओ 7835, जेआरओ-524, (नवीन), जेआरओ-66 हैं. इन किस्मों से अच्छी मात्रा में रेशा प्राप्त होता है.

भूमि का चुनाव और खेत की तैयारी

जूट की खेती भारत में पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़ कर सभी जगह आसानी से की जा सकती है. इस की खेती सब से अधिक पश्चिम बंगाल में की जाती है. इस के अलावा उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिशा, असम में भी इस की खेती अच्छे लैवल पर की जाती है.

जूट की खेती के लिए समतल भूमि का होना जरूरी है, जिस में पानी का निकास अच्छे से हो. इस के अलावा पानी रोकने की पर्याप्त क्षमता वाली दोमट और मटियार दोमट भूमि भी जूट की खेती के लिए अधिक उपयुक्त मानी जाती है.

इस की बोआई के पूर्व खेत की अच्छी तरह से जुताई कर के मिट्टी को भुरभुरा बना लेना चाहिए. मिट्टी को भुरभुरा बना लेना इसलिए जरूरी होता है, क्योंकि जूट का बीज बहुत छोटा होता है. इस से बीज का जमाव अच्छा होता है. बोआई के समय मिट्टी में उपयुक्त नमी होना जरूरी है और इस से जमाव सही होता है.

बोआई का उचित समय

जूट की खेती अगर उन्नत तरीकों और समय से की जाए तो इस से अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है. इस की बोआई का सब से उचित समय मार्च महीने से ले कर जुलाई महीने तक का होता है. तराई क्षेत्र में इसे मार्च महीने से बोना शुरू कर दिया जाता है, लेकिन ऊंची भूमि पर यह जुलाई महीने तक बोई जाती है.

बीज शोधन व बोआई विधि

कृषि विज्ञान केंद्र, बस्ती में विशेषज्ञ राघवेंद्र विक्रम सिंह ने बताया कि जूट के बीज को खेतों में बोने से पहले थीरम 3 ग्राम या कार्बंडाजिम 50 डब्लूपी 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधित किया जाना चाहिए.

अगर इस की बोआई सीड ड्रिल से की जा रही है, तो 3-5 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की मात्रा पर्याप्त होती है. लेकिन छिटकाव विधि से बोने पर बीज की मात्रा अधिक लगती है और इस में प्रति हेक्टेयर 5-6 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता पड़ती है.

जूट के बीज की लाइन से लाइन की दूरी 30 सैंटीमीटर व पौध से पौध की दूरी 7-8 सैंटीमीटर और गहराई 2-3 सैंटीमीटर से अधिक नहीं रखनी चाहिए. सीड ड्रिल के प्रयोग से एक व्यक्ति एक दिन में एक एकड़ की बोआई कर सकता है.

खाद व उर्वरक

जूट की खेती से अधिक उत्पादन हासिल करने के लिए खेत की जुताई के वक्त 25 से 30

टन तक सड़ी हुई गोबर की खाद को खेत में डाल कर मिट्टी में अच्छी तरह से मिला लेना चाहिए. साथ ही, खेतों में आखिरी जुताई के समय नाइट्रोजन 45 किलोग्राम, फास्फोरस 25 किलोग्राम व पोटाश 25 किलोग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर के हिसाब से खेत में डाल कर मिट्टी में मिला दें. इस के बाद बोआई के समय उपयोग की गई नाइट्रोजन की आधी मात्रा को 2 बार पौधों की सिंचाई के साथ देना फसल के लिए लाभदायक होता है.

फसल की देखभाल व खरपतवार नियंत्रण

फसल की बोआई के पश्चात जब पौधे जमीन से बाहर आ जाते हैं, तो फसल की पहली गुड़ाई की जाती है. इस से फसल से घास व खरपतवार निकल जाते हैं. इस से जूट के पौधों की जड़ें साफ और हलकी हो जाती हैं व पौधों को वातावरण से औक्सीजन और नाइट्रोजन आसानी से मिलने लगता है. पौधे तेजी से बढ़ते हैं. गुड़ाई का काम फसल बोआई के 21 दिनों के भीतर कर लिया जाना चाहिए.

जूट की फसल में खरपतवार का नियंत्रण किया जाना बहुत जरूरी है, क्योंकि फसल में खरपतवार होने से फसल की वृद्धि पर बुरा असर पड़ता है, इसलिए फसल की बोआई के 20 से 25 दिन बाद खरपतवार निराई कर के निकाल देना चाहिए और विरलीकरण कर के पौधे से पौधे की दूरी 6-8 सैंटीमीटर कर देनी चाहिए.

गुड़ाई के 2-3 दिन बाद फसल की हलकी सिंचाई कर देनी चाहिए. जब तक बारिश न हो, तब तक हर 15 दिन पर सिंचाई करते रहें. बारिश शुरू हो जाने पर सिंचाई की आवश्यकता नहीं रहती है.

फसल में अधिक खरपतवार की दशा में इस का नियंत्रण खरपतवारनाशी से किया जा सकता है. खड़ी फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए 30-35 दिन के अंदर क्विनालफास इथाइल 5 फीसदी की एक लिटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना प्रभावी होता है.

फसल सुरक्षा

जूट की फसल में 2 तरह की बीमारियों का प्रकोप ज्यादा देखा गया है, जिस से फसल की जड़ तथा तनों में सड़न पैदा होने से कभीकभी फसल पूरी तरह से खराब हो जाती है. इस से बचाव के लिए बीज को शोधित कर के ही बोना चाहिए. इन बीमारियों से बचाव के लिए ट्राइकोडर्मा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर और 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर 50 किलोग्राम गोबर की सड़ी खाद में मिला कर प्रयोग करना चाहिए.

वहीं जूट फसल में सैमीलूपर एपियन स्टेम बीविल कीटों का प्रकोप देखा गया है. इन कीटों के रोकथाम के लिए 1.5 लिटर डाइकोफाल को 700-800 लिटर पानी में घोल कर फसल की 40-45, 60-65 और 100-105 दिन की अवस्थाओं पर छिड़काव किया जा सकता है.

इन कीटों के नियंत्रण के लिए नीम उत्पादित रसायन एजादीरैक्टीन 0.03 फीसदी का 1.5 लिटर की दर से घोल बना कर छिड़काव करना चाहिए.

फसल की कटाई व पौधों को गलाना

जूट की फसल से अच्छी मात्रा में रेशा हासिल करने के लिए फसल की कटाई 100 से 120 दिन बाद की जानी उचित होती है, क्योंकि फसल की जल्दी कटाई करने पर रेशे की कम मात्रा हासिल होती है. जूट की फसल तैयार होने के बाद उस के डंठल को पानी में दबा कर गलाया जाता है, जिस से डंठल से रेशे को अलग किया जा सके.

फसल को गलाने के पहले पौधों को भूमि की सतह से ऊपर काट लिया जाता है. इस के बाद काटी गई फसल को 2 से 3 दिन के लिए जमीन पर छोड़ देते हैं. इस से पौधे से पत्तियां सूख कर अलग हो जाती हैं. जब पौधों से पत्तियां सूख कर अलग हो जाएं, तो इन्हें गट्ठरों में बांध कर गड्ढे में पानी भर कर किसी वजनी चीज से ढक दिया जाता है. इस दौरान यह ध्यान दें कि डंठल तालाब की मिट्टी में न दबने पाएं.

पौधों से गल कर रेशों को अलग होने में एक हफ्ते से ले कर एक महीने तक का समय लग सकता है. पानी में दबाए गए जूट के डंठलों को बीचबीच में चैक करते रहें और जब डंठल से रेशे सरलता अलग होने लगे तो दबाए गए डंठलों को पानी से निकाल कर रेशे अलग कर लेते हैं.

रेशे निकालना व सुखाना

जब जूट के पौधों से रेशों को निकाल कर अलग कर लें, तो रेशे को साफ पानी में अच्छी तरह धो कर किसी तार या बांस इत्यादि पर लटका कर कड़ी धूप में 3-4 दिन तक सुखा लेना चाहिए.

इस दौरान यह ध्यान दें कि सुखाने की अवधि में रेशे को उलटतेपलटते रहें. जूट की एक हेक्टेयर फसल से लगभग 14 से 20 क्विंटल के शुद्ध रेशे का उत्पादन प्राप्त होता है. ■

परवल और धनिया
कीट और रोगों की रोकथाम

* डा. शैलेंद्र सिंह, वैज्ञानिक (पादप सुरक्षा)

कोरोना वायरस को ध्यान में रखते हुए जिन किसान भाइयों ने आरोग्य सेतु ऐप डाउनलोड नहीं किया है, वे अतिशीघ्र उस को डाउनलोड कर लें. इस ऐप के माध्यम से आप के आसपास अगर कोई कोरोना वायरस पौजिटिव गुजरता है तो यह आप को मैसेज के द्वारा अलर्ट करेगा.

जिन किसान भाइयों ने किसान रथ ऐप डाउनलोड नहीं किया है, वे भी इस को जरूर डाउनलोड कर लें. यह आप को अपने अनाज को बेचने, खरीदने, ट्रांसपोर्टेशन में मदद करेगा.

इसी के साथ परवल और धनिया की फसल में लगने वाले प्रमुख कीट और रोगों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रस्तुत है :

परवल

फल मक्खी कीट : प्रोन कीट कोमल अवयस्क फलों की त्वचा के नीचे अंडे देती है, जिस से यह गिडार निकल कर गूदे को खा कर फलों को सड़ा देती है. फल पीले पर कर सड़ने लगते हैं.

प्रबंधन : कीट आने से पहले नीम तेल 1500 पीपीएम की 3 मिलीलिटर दवा प्रति लिटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें.

यदि कीट आ गया है तो क्विनालफास 25 ईसी की 2 मिलीलिटर दवा प्रति लिटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें.

गलन रोग : इस रोग का प्रकोप अविकसित फलों पर अधिक होता है, जिस के कारण पूरा फल सड़ कर गिर जाता है.

प्रबंधन : इस रोग के नियंत्रण के लिए कौपर औक्सिक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी की 3 ग्राम दवा प्रति लिटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें.

खर्रा रोग : इस के प्रकोप से पत्तियों और फलों पर सफेद चूर्ण दिखाई देते हैं. परिणामस्वरूप पत्तियां पीली पड़ कर नीचे गिर जाती हैं.

प्रबंधन : इस रोग के नियंत्रण के लिए कसुगमायसिन्न 3 फीसदी की 2 मिलीलिटर दवा प्रति लिटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें.

धनिया

माहू कीट : यह कीट फूल आने के समय शिशु एवं प्रोण दोनों ही रस चूस कर नुकसान करते हैं. इस से प्रभावित फलों व बीजों का आकार छोटा हो जाता है.

प्रबंधन : कीट आने से पहले नीम तेल 1500 पीपीएम की 3 मिलीलिटर दवा प्रति लिटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें.

यदि कीट आ गया है तो इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल की 10 मिलीलिटर दवा प्रति 15 लिटर पानी में घोल बना कर तुरंत छिड़काव करें.

स्टेम गाल रोग : यह धनिया का प्रमुख

रोग है. इस में पत्तियों के ऊपरी भाग, तना, शाखाएं, फूल और फूल व फल पर रोग के लक्षण कुछ उभरे हुए फफोलों जैसे दिखाई देते हैं. आरंभ में रोग से संक्रमित तना पीला होने लगता है और मिट्टी के पास से तने पर छोटी गाल उभार लिए हुए भूरे रंग की होती है.

प्रबंधन : बीज को बोने से पूर्व थीरम 2.5 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर लें. पौधों के अवशेष को नष्ट कर दें.

यदि रोग आ गया है तो कार्बंडाजिम 1.5 ग्राम प्रति लिटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें.

उकठा रोग : इस रोग से प्रभावित पौधे शुरू में पीला पड़ने लगते हैं. कुछ ही दिनों में इन का शीर्ष मुरझा कर सूख जाता है और पौधा मर जाता है.

प्रबंधन : खेत की अप्रैलमई माह में सिंचाई कर के गरमियों की गहरी जुताई करें और खाली छोड़ दें. 2 वर्ष का फसल चक्र अपनाएं. धनिया के स्थान पर अदरक या सरसों उगाएं.

बोआई से पहले और आखिरी जुताई के साथ ट्राइकोडर्मा 4 से 5 किलोग्राम और गोबर की 50 से 60 किलोग्राम सड़ी हुई खाद मिला कर 1 हेक्टेयर खेत में फैला कर जुताई कराएं.

बुकनी रोग : इसे खर्रा रोग भी कहते हैं. इस रोग के कारण पत्तियों और तनों पर सफेदी आ जाती है व पत्तियां पीली पड़ जाती हैं.

प्रबंधन : इस के उपचार के लिए घुलनशील गंधक (सल्फैक्स) 3 किलोग्राम अथवा 600 मिलीलिटर डाई कूनो कैप प्रति हेक्टेयर की दर से 800 लिटर पानी में घोल कर फसल पर छिड़काव करें.

अधिक जानकारी के लिए नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों से संपर्क करें. ■

लू से बचाव के घरेलू नुसखे

* डा. सोनाली शर्मा

गरमी के दिनों में तेज धूप के कारण वातावरण की नमी पूरी तरह नष्ट हो जाती है. इन दिनों में सूर्य की पराबैंगनी किरणों का शरीर पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, जिस से शरीर का तापमान बढ़ जाता है. इस कारण शरीर में नियंत्रण की प्रक्रिया बंद हो जाती है.

शरीर में अधिक बुखार और बेचैनी होने के साथ बारबार उलटियां होती हैं. उलटियां अधिक होने से शरीर में पानी की मात्रा कम हो जाती है, जिस कारण रोगी को अधिक प्यास लगती है. रोगी के सिर में तेज दर्द होता है, उसे चक्कर आते हैं. रोगी के हाथपैर में तेज कंपन, शारीरिक कमजोरी, पीड़ा और अधिक प्यास के लक्षण दिखाई देते हैं. रोगी की त्वचा लाल, गरम और शुष्क हो जाती है.

ये लू के लक्षण हैं. लू जिसे उष्माघात भी कहते हैं, यह अकसर गरमी के मौसम में तेज धूप में देर तक काम करने, धूप में ज्यादा मेहनत करने से होता है. यह रोग किसी भी उम्र में हो सकता है, परंतु छोटे बच्चों व बुजुर्गों में अधिक संभावना रहती है.

मोटे व्यक्ति शराब का सेवन करने और चायकौफी का अधिक सेवन करने वाले लोगों में इस की संभावना अधिक रहती है.

लू से बचाव के लिए आप के घर में ही कई ऐसी चीजे हैं, जिन का इस्तेमाल कर इस से बचा जा सकता है. इस से बचने के लिए इन बातों का ध्यान रखते हुए घरेलू चीजों का उपयोग करें:

जल: अंशुघात (लू) के शिकार औरत और आदमी को सब से पहले सिर से पैर तक ठंडे पानी से अच्छी तरह नहलाना

चाहिए. सिर पर काफी देर तक ठंडा पानी डालना चाहिए. गरमी में इच्छा के अनुसार बारबार पानी पीने से लू नहीं लगती है.

फालसा: फालसा के साथ सेंधा नमक खाने से लू नहीं लगती है. 500 ग्राम पके हुए फालसों को आधा लिटर पानी में 3-4 घंटे तक भिगो कर स्पंज करें. बर्फ के पानी में चादर पर लपेट दें. यह क्रिया बुखार के 102 डिगरी फारेनहाइट आने तक करते रहें.

कच्चा आम (केरी): आम की कच्ची केरी को गरम राख में भून कर, पानी में उस के गूदे को मिला कर उस में थोड़ी सी शक्कर डाल कर पिलाने से लू का प्रकोप खत्म हो जाता है. कच्चे आम (केरी) का शरबत (पन्ना) बना कर पीने से लू और बेचैनी में कमी आती है. केरी को पानी में डाल कर उबालें और शरबत बना कर साफ बोतलों में रख लें. गरमियों में इस में पानी मिला कर सेवन करने से यह ठंडक देता है और लू के प्रकोप से भी बचाता है.

नीम: नीम की जड़ों का चूर्ण 10 ग्राम और मिश्री 10 ग्राम को पीस कर के पानी के साथ छान कर पिलाने से लू लगना शांत हो जाता है. नीम के पत्तों के रस में शक्कर (चीनी) मिला कर सुबह और शाम 8 दिन तक पीने से सभी प्रकार की गरमी शांत हो जाती है.

बर्फ: लू से पीड़ित रोगी के सिर पर बर्फ की थैली भी रख सकते हैं. बर्फ का चूरा सिर पर रखने और बर्फ का पानी सिर पर डालने से लू से राहत मिलती है. बर्फ के पानी में चीनी को मिला कर शरबत बना लें. इस में थोड़ा सा नमक डाल कर पीएं. लू से परेशान मरीज के कपड़े उतार कर हवा करें. बर्फ के पानी में चादर भिगो कर शरीर पर लपेट दें. यह क्रिया बुखार के 102 डिगरी फारेनहाइट आने तक करते रहें.

नीबू: इस का रस पानी में मिला कर थोड़ा सा सेंधा नमक डाल कर रोगी को बारबार पिलाने से लू का प्रकोप खत्म हो जाता है. रोगी को नीबू के रस की शिकंजी पिलाने से भी लू का प्रकोप कम हो जाता है. लगभग 5 से 10 मिलीलिटर पानी में नीबू का रस मिला कर सेवन करने से लू से होने वाले खतरों से बचा जा सकता है. नीबू, नमक और शक्कर मिला कर पीने से उलटी नहीं होती है.

तुलसी: तुलसी के पत्तों का चूर्ण लगभग 5 ग्राम की मात्रा में, पिपली का चूर्ण लगभग 3 ग्राम की मात्रा में और नमक 5 ग्राम की मात्रा में ले कर पानी में उबालें. इस मिश्रण को छान कर कुनकुना पीने से लू से होने वाले खतरों से बचा जा सकता है. तुलसी के लगभग 20 मिलीलिटर रस में मिश्री मिला कर चाटने से लू से बचा जा सकता है.

प्याज: लगभग 2 ग्राम जीरे के चूर्ण को पिसी हुई प्याज के साथ मिश्री मिला कर खाने से लू में बहुत लाभ मिलता है. प्याज के रस को कनपटियों और छाती पर मसलने से लू ठीक हो जाती है. गरमी के दिनों में धूप में निकलने से पहले एक कच्चा प्याज खा लें. इस से लू लगने का खतरा नहीं रहता है. लू से पीड़ित रोगी को प्याज का रस लगभग एक चम्मच थोड़ीथोड़ी देर से पिलाएं. प्याज और सिरका मिला कर इस की चटनी बना कर खाने से लू से राहत मिलती है.

इमली: इसे पानी में उबाल लें और पानी को छान कर 100 मिलीलिटर की मात्रा में शरबत की तरह लेने से लू से बचा जा सकता है. 50 ग्राम इमली को 2 घंटे तक 500 मिलीलिटर पानी में भिगो कर मसल लें और छान लें. इस के बाद इस में स्वाद के अनुसार कोई भी मीठी चीज जैसे बूरा, मिश्री, चीनी मिला कर छान लें और सेवन करें. इस प्रयोग से गरमी में लू लगना, बेचैनी, जी मिचलाना आदि कष्ट दूर हो जाते हैं.

चंदन: लगभग 125 ग्राम सफेद चंदन को पीस कर इस का चूर्ण बना लें. अब इस चूर्ण को 500 मिलीलिटर गुलाब जल में रात को सोने से पहले भिगो कर रख दें. सुबह इसी जल में 400 ग्राम मिश्री मिला कर उबाल लें. इस तरह से तैयार किए गए शरबत को 20 मिलीलिटर पानी के साथ लेने से लू का प्रकोप शांत हो जाता है.

लू लगने पर पानी में चंदन, खस व गुलाब जल एकसाथ मिलाएं और बेहोशी की अवस्था में मुंह पर पानी के छींटे दे दें. चंदन का तेल यदि दूध में एक बूंद डाल कर पी लिया जाए, तो लू के सभी दोष खत्म हो जाते हैं.

शहतूत: लू और गरमी से बचने के लिए रोजाना शहतूत का सेवन करना चाहिए. पेट, गुरदे और पेशाब की जलन शहतूत खाने से दूर होती है.

पोदीना: आधा ग्राम पोदीने के रस को इतने ही ग्राम पानी के साथ पीने से लू से होने वाले खतरों से बचा जा सकता है. सूखा पोदीना, खस और बड़ी इलायची 50-50 ग्राम बराबर मात्रा में कूट लें और इस का चूर्ण बना लें और एक लिटर पानी में उबाल कर इस का सेवन करें. ■

बंपर फसल, पर क्या फायदा. जब कोई किसान अपनी शानदार फसल को खेत में लहलहाता देखता है तो उसे महसूस होता है कि उस की मेहनत रंग ला रही है, पर जब वही फसल मंडी में बिकने के लिए जाती है, तब कम दाम मिलने पर उस के किएकराए पर मानो पानी सा फिर जाता है और वह शासनप्रशासन की ओर उम्मीद भरी निगाहों से ताकता है, पर नतीजा उम्मीद के मुताबिक नहीं मिलता है, इस के बावजूद अन्नदाता किसान फिर खेतों में फसल उगाता है, ताकि हर पेट को भोजन मिल सके.

कुछ कहती हैं तसवीरें

खेतीकिसानी की पाक्षिक पत्रिका

मात्र 499 रु. सालाना दे कर हर पखवारे
3 प्रतियां रजिस्टर्ड डाक से घर बैठे मंगाएं

फार्म एन फूड

दिल्ली प्रैस की पत्रिका

साल भर में मिलेंगी 72 प्रतियां

मात्र 499 रु. में

रजिस्टर्ड डाक से

खुद पढ़ें, दूसरों को भी पढ़वाएं

फार्म एन फूड पत्रिका का व्हाट्सएप नंबर : 08447177778

यह फार्म अपने चैक / डी.डी. के साथ भेजें

नाम: .....

पता: .....

..... पिन: .....

मोबाइल नं.: ..... फोन नं.: ..... ई-मेल: ..... WhatsApp Yes No

चैक / डी.डी. नं.: ..... तिथि: .....

DELHI PRAKASHNAN VITRAN PRIVATE LIMITED के पक्ष में देय होगा.

क्रैडिट कार्ड: ☐ अमेक्स ☐ वीसा ☐ मास्टर कार्ड ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ अंतिम तिथि: MM ☐☐ YY ☐☐

जारी करने वाले बैंक का नाम: ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

_____ हस्ताक्षर _____ तिथि

नियम व शर्तें:

कृपया इस फार्म को भर कर चैक/डीडी के साथ इस पते पर भेजें : DELHI PRAKASHAN VITRAN PRIVATE LIMITED ई-8, झंडेवाला एस्टेट, ग्राउंड फ्लोर, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. चैक/डीडी का भुगतान भारत में मान्य हो. यह विशेष योजना कुछ समय के लिए ही है. पत्रिका डिलीवरी के लिए 3-4 हफ्तों का समय दें. पत्रिका की प्रति आप को डाक द्वारा प्राप्त होगी. समस्त विवाद केवल दिल्ली न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र के अधीन है. दिल्ली प्रैस का सब्सक्रिप्शन विभाग : टोल फ्री नंबर 1800 103 8880 (सभी लैंडलाइन और मोबाइल द्वारा मान्य, सोमवार से शनिवार सुबह 10:00 बजे से शाम 6:00 बजे तक) फोन नंबर : 011-41398888, एक्सटेंशन : 119, 221, 264 मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सएप नंबर : 08588843408 फैक्स : 011-41540714/41398885, ईमेल: subscription@delhipress.in औनलाइन http://www.delhipress.in/subscribe पर भी आप सब्सक्राइब कर सकते हैं.

(REGISTERED) RNI DELHIN/ 25645/2008/DL(C)-14/1189/20-22 P.O. SRT Nagar ND-55 Posting Dt. 8 to 14, Pgs. 36 Published on 1/5/2020

स्टोमाफिट®

टैबलेट व लिक्विड

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

रखे स्टमक फिट... पेट फिट...आप फिट

बिस्मथ है कारगर

एच. पायलोरी, पैप्टिक अल्सर या पेट से जुड़ी अन्य समस्याओं के लिए बाजार में मौजूद ऐंटीबायोटिक दवाएं और ऐंटासिड कुछ समय के लिए राहत तो देते हैं मगर समस्या जस की तस रहती है. स्टोमाफिट में मौजूद बिस्मथ विकार को बढ़ने से रोकने के साथसाथ उस का निदान भी करता है. इसके प्रयोग के बाद धीरेधीरे पाचन क्रिया भी सुचारु रूप से काम करने लगती है.

आस्ट्रेलिया के डॉ. बेरी जे. मार्शल को बिस्मथ के इस्तेमाल से एच. पायलोरी को जड़ से मिटाने में सफल होने की वजह से 2005 का मेडिसन में नोबल पुरस्कार मिला.

फायदा पहली खुराक से ही

2 चम्मच/2 टैबलेट दिन में 3 बार खाने के बाद आधा कप पानी के साथ 4 हफ्तो तक

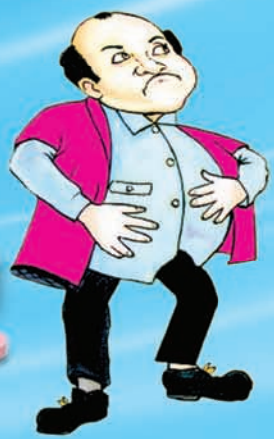

अपच गैस एसिडिटी से छुटकारा

100ml. 200ml. 450ml में उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.
फोन : 8447977889/999, 011-46108735, मेल : info@stomafit.com
फ्री होम डिलीवरी 8447977999